सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ — 226007

फोन : 0522—2740406

E-mail : tameer1963@gmail.com

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ—226007

सच्चा राही

A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)

IFS Code: SBIN0000125

Swift Code: SBINNB157

State Bank of India,

Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522—2740406 अथवा ईमेल: **tameer1963@gmail.com** पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अगस्त, 2019 वर्ष 18 अंक 06

ईदे कुर्बां

ईदे कुर्बां आगई ख़ुशयां मनाओ दोस्तो
अल्लाहु अक्बर की सदा अब तुम लगाओ दोस्तो
पढ़ कर दोगाना ईद का, ज़ब्ह़ कुर्बानी करो
रब की रिज़ा के वास्ते तुम ज़ब्ह़ कुर्बानी करो
गोश्त खाओ और खिलाओ यह अमल मस्नून है
हुब्बे बाहम तुम बढ़ाओ यह अमल मस्नून है
ख़ुश अ़ज़ीज़ों को करो ग़ुरबा को रखो याद तुम
गोश्त की तक़्सीम में ग़ुरबा को रखो याद तुम
हैं दुआ़एं कर रहे हुज्जाज आ़लम के लिये
रब से दुआ़एं हम करें हुज्जाजे आ़लम के लिए
ह़ज्ज हो मक़्बूल उन का या ख़ुदाए ज़ुलजलाल
ख़ुश रहें दौराने हज पाएं न कोई वह मलाल
ख़ैरियत से घर पहुंच कर शुक्रे रब लाएं बजा
सलाम व रहमत भी पढ़ें सब, बर नबीये मुस्तफ़ा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा..................................	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें..................	अमतुल्लाह तस्नीम	07
कहानी क़ुर्बानी की..............................	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद........	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक......................................	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	15
दिल व ज़बान की हिफ़ाज़त.............	मौलाना सै0 हमज़ा हसनी नदवी	19
कर्ज़दार..	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	21
भिखारी और मुआशरे..........................	अबू ओमामा	22
आपके प्रश्नों के उत्तर.........................	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	26
स्वतंत्रता दिवस (पद्य).........................	इदारा	29
तीसरे ख़लीफ़ा	अफ़ीफ़ा सिद्दीक़ा	31
दीन से अनभिज्ञता अथवा....................	एडीटर	36
पाँचवे ख़ली–फ़ए–राशिद	मौलाना ग़ुलाम रसूल महर	39
अपील बराए तामीर.............................	इदारा	41
उर्दू सीखिए...	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद—

फिर जो उपदेश (नसीहत) दिया गया था जब वे उसको भूल गए फिर हमने उनके लिए हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब वे पाई हुई चीज़ों में मस्त हो गए तो हमने अचानक उनको धर पकड़ा तो वे निराश हो कर रह गए(44) तो जिन लोगों ने अत्याचार किया उनकी जड़ ही काट कर रख दी गयी और वास्तविक प्रशंसा तो अल्लाह के लिए है जो संसारों का पालनहार है[1](45) आप पूछिए कि तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर अल्लाह तुम्हारे कान और दृष्टि ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो अल्लाह के अलावा कौन है वह माबूद (पूज्य) जो तुम्हें यह चीज़ें ला कर दे दे, देखिए हम बातें कैसे अलग अलग शैली में बयान करते जाते हैं फिर भी वे मुंह फेरे रहते हैं(46) आप कह दीजिए कि देखो तो अगर तुम पर बेखबरी में या अलल एलान अल्लाह का अज़ाब आ जाए तो सिवाए अन्याय करने वालों के और कौन हलाक़ (विनष्ट) होगा[2](47) और हम रसूलों को शुभ समाचार सुनाने वाला, डराने वाला बना कर भेजते हैं बस जो भी ईमान लाया और उसने अपने को संवार लिया तो ऐसों पर न कोई डर है और न वे दुखी होंगे(48) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो नाफ़रमानी (अवज्ञा) करते रहने की वजह से वही अज़ाब (दण्ड) का शिकार होंगे[3](49) आप कह दीजिए कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और न ही मैं ढ़का—छिपा जानता हूं और न मैं यह कहता हूं कि मैं कोई फरिश्ता हूं बस मैं तो जो मेरे पास वह्य (ईशवाणी) आती है मैं तो उसी पर चलता हूँ[4] आप पूछिए क्या अंधा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं क्या तुम विचार नहीं करते[5](50) और इस (क़ुरआन) के द्वारा जिन को डर है उनको सावधान कीजिए कि वे अपने पालनहार के पास इकट्ठा होंगे और उनके लिए इसके सिवा न कोई समर्थक होगा और न सिफारिश करने वाला, शायद कि वे सावधान हो जाएं(51) और जो लोग भी सुबह व शाम अपने पालनहार को पुकारते हैं उसकी खुशी चाहते हैं उनको आप दूर मत कर दीजिए न उनका

कोई हिसाब आपके ज़िम्मे है और न आपका थोड़ा सा भी हिसाब उनके ज़िम्मे है, बस आप उनको दूर कर देंगे तो अन्याय करने वालों में हो जाएंगे[6](52) इसी तरह हमने एक को दूसरे से आज़माया कि वे कहें कि क्या हम सबमें यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने अपना फ़ज़ल (कृपा) किया, क्या अल्लाह शुक्र करने वालों से खूब अवगत नहीं[7](53) और जब आप के पास वे लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप कहिए कि तुम पर सलामती हो तुम्हारे पालनहार ने तो अपने ऊपर रहमत (दयालुता) ज़रूरी कर रखी है तुममें जो नादानी में कोई बुराई कर बैठेगा फिर उसके बाद तौबा कर लेगा और सुधार कर लेगा तो बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है(54) और इसी तरह हम दलीलें विस्तार के साथ बयान करते जाते हैं ताकि अपराधियों का रास्ता भी खुल कर सामने आ जाए[8](55) आप कह दीजिए कि मुझे इस से रोका गया कि तुम अल्लाह के अलावा जिसको पुकारते हो मैं उसकी बन्दगी (उपासना) करूँ, आप साफ कह दीजिए कि मैं तुम्हारी इच्छाओं पर नहीं चल सकता वरना तो मैं बहक जाऊँगा और मैं रास्ते पर नहीं रहूँगा(56) आप कह दीजिए कि मेरे पास तो मेरे पालनहार की ओर से प्रमाण (दलील) मौजूद है और तुम उसको नहीं मानते तुम्हें जिस चीज़ की जल्दी है वह मेरे पास नहीं, सरकार तो अल्लाह ही की है वही सत्य को खोलता है और वही बेहतर फैसला करने वाला है(57) आप कह दीजिए कि तुम जिस चीज़ की जल्दी मचाते हो अगर वह मेरे पास होती तो हमारा तुम्हारा फैसला कब का हो चुका होता और अल्लाह अन्याय करने वालों से खूब अवगत है[9](58)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. पापी को अल्लाह थोड़ा सा पकड़ता है अगर वह गिड़गिड़ाया और तौबा की तो बच गया और अगर पकड़ को न समझा तो ढ़ील दी जाती है यहां तक कि जब दुन्या में पूरी तरह मस्त होता है तो अचानक पकड़ होती है अज़ाब (दण्ड) से या मौत से।

2. तौबा में देर न करे जो कान और आँख और दिल है शायद फिर न मिलें या इस देरी ही में अज़ाब (दण्ड) आ जाय तौबा कर चुका है तो बच जाएगा वरना विनष्ट हो जाएगा।

3. यानी तुम जो अल्लाह के अज़ाब से निश्चित हो कर बेहूदा मांगें पैग़म्बर से करते हो और उनकी पुष्टि के लिए अपनी ओर से मानक बनाते हो ख़ूब समझ लो दुन्या में पैग़म्बर इसलिए नहीं भेजे गये कि तुम्हारी उलटी सीधी मांगें पूरी करते रहें उनका काम तो डराना और ख़ुशख़बरी देना है।

शेष पृष्ठ ......20...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

औलाद में एक को दूसरे पर प्रधानता देने की मुमानियतः–

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 से रिवायत है कि मेरे वालिद मुझ को ले कर हुज़ूर सल्ल0 की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया कि मैं ने अपने इस बेटे को एक ग़ुलाम दिया है, आपने फरमाया क्या सब बेटों को इसी प्रकार दिया है अर्ज किया नहीं, फरमाया तो फिर इस से भी वापस ले लो।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम ने सब लड़कों को इसी प्रकार दिया है? अर्ज किया नहीं, आप सल्ल0 ने फरमाया, अल्लाह से डरो, अपनी औलाद के मध्य बराबरी व इंसाफ़ करो, तो मेरे बाप ने अपना दिया हुआ वापस ले लिया।

एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ऐ बशीर रज़ि0 क्या तुम्हारे और लड़के भी हैं? अर्ज किया हाँ, फरमाया, सब के साथ यही मुआमला किया है? अर्ज किया नहीं फरमाया, तो मुझे गवाह न बनाओ, मैं इस जुल्म पर गवाह बनना नहीं चाहता।

एक रिवायत में है कि मुझको ऐसे जुल्म पर गवाह मत करो।

एक रिवायत में है कि मेरे सिवा किसी और को गवाह कर लो, फिर फरमाया तुम चाहते हो कि सब लड़के तुम्हारे साथ भलाई करें? अर्ज किया जी हां, फरमाया बस तो तुम भी उनके साथ एक मुआमला रखो।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

मरने वाले पर तीन दिन से ज़ियादा सोग (शोक) मनाने की मुमानियतः–

हज़रत जैनब रज़ि0 अबू सलमा से रिवायत है कि मैं उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ि0 के यहां उनके बाप अबू सुफयान बिन हर्ब के देहान्त के बाद गयी तो मैंने देखा कि उन्होंने जर्द रंग की खुशबू लगाई और उसमें से कुछ एक लड़की के लगाया और कुछ अपने गाल पर मल लिया और कहा कि वल्लाह मुझे खुशबू लगाने की कुछ ज़रूरत नहीं, लेकिन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि मिम्बर पर खड़े हो कर फरमा रहे थे कि जो औरत अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो उसको जायज़ नहीं कि वह मय्यत पर तीन दिन से ज़ियादा शोक करे। हाँ पति के लिए चार माह दस दिन हैं। हज़रत जैनब रज़ि0 कहती हैं कि फिर मैं एक बार उम्मुल मोमिनीन जैनब बिन्ते जहश रज़ि0 के पास उनके भाई के इंतकाल के बाद गई उन्होंने खुशबू मंगा कर अपने बदन पर मली और कहा मुझे खुशबू की कोई ज़रूरत नहीं मगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है आप मिम्बर पर फरमा रहे थे कि जो

शेष पृष्ठ ......35...पर

कहानी कुर्बानी की संक्षेप में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

कई हज़ार वर्षों पहले अल्लाह के एक प्रिय सन्देष्टा इब्राहीम गुज़रे हैं, अल्लाह ने उनको उच्चकोटि के सन्देष्टाओं में से एक बनाया था, उन को ईसाई और यहूदी भी सन्देष्टा मानते हैं, पवित्र कुर्आन में उनका वर्णन कई स्थानों पर आया है। अल्लाह ने उनकी बड़ी कठिन परिक्षाएं लीं वह हर परीक्षा में सफल रहे, अल्लाह ने उनको अपना मित्र (ख़लील) घोषित किया।

अल्लाह ने उनको छोटी आयु ही में पैग़म्बरी का पद प्रदान किया था। पवित्र कुर्आन में उनके पिता का नाम आज़र बताया गया है। आज़र मूर्तियाँ बनाते और उनकी पूजा करते थे, इबराहीम पैग़म्बर हो चुके थे। वह तो एकेश्वरवाद की शिक्षा देने हेतु पैग़म्बर बनाए गये थे, उन्होंने अपने पिता को अच्छे ढ़ंग से मूर्ति पूजा तथा शिर्क से रोका परन्तु आज़र बिगड़ गये और बेटे को मार डालने की धम्की दी। इबराहीम अ0 उनसे अलग हो गये। उनके हिदायत (सत्य मार्ग पाने) की दुआ करते रहे, परन्तु आखिर में उनको अल्लाह की ओर से उनके लिए दुआ करने से रोक दिया गया था।

क़ौम ने इबराहीम अ0 को नमरूद बादशाह से भिड़ा दिया वहाँ उन्होंने अपने तर्कों द्वारा नमरूद को चुप कर दिया नमरूद झुंझला कर रह गया, जब क़ौम ने मूर्ति पूजा न छोड़ी तो उनको सबक़ सिखाने के लिए एक रोज़ अवसर पाकर उनकी मूर्तियों को तोड़ ड़ाला, बादशाह नमरूद तो जला बैठा ही था अब क़ौम को भी मौक़ा मिल गया तो आग का एक बहुत बड़ा अलाव जला कर इबराहीम अ0 को उसमें फेंक दिया परन्तु अल्लाह के आदेश से आग इबराहीम पर ठण्डी हो गयी और कई दिनों बाद कौम ने देखा कि इबराहीम जीवित हैं तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ इतना बड़ा चमत्कार देखा परन्तु ईमान न लाए।

एक लम्बे समय तक इबराहीम अ0 एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा क़ौम को देते रहे परन्तु इबराहीम अ0 के चचेरे भाई ''लूत'' के अतिरिक्त और कोई ईमान न लाया अब इबराहीम अ0 अल्लाह के आदेश से अपना देश इराक़ छोड़ कर अपनी पत्नी सारा के साथ शाम चले गये। लूत अ0 भी शाम में साथ थे। शाम जाते हुए मिस्र से गुज़र हुआ मिस्र के बादशाह ने सारा को एक दासी ''हाजर'' भेंट की, सारा

बाँझ थीं शाम पहुंच कर सारा ने ''हाजर'' को अपने पति इबराहीम अ0 को भेंट कर दिया इबराहीम अ0 ने ''हाजर'' को अपनी पत्नी बना लिया और अल्लाह से दुआ की ऐ अल्लाह मुझे नेक बेटा प्रदान कर अतएव हज़रत हाजर से बड़ा सुन्दर बच्चा पैदा हुआ उस समय इबराहीम की आयु 86 वर्ष की थी और सारा बांझ थीं इस परिस्थिति में फिर बड़ी परीक्षा हुई। आदेश हुआ कि माँ–बेटे को मक्का की सूखी पहाड़ियों के बीच छोड़ आओ वहां कोई मनुष्य न मानव न वृक्ष था, परन्तु इबराईम तो अपने रब के उच्च कोटि के सन्देष्टा थे आदेश का अनुपालन किया, अल्लाह ने माँ बेटे की मदद की वहां एक चश्मा पैदा कर दिया जो आज भी विद्यमान है जिस को जम जम कहते हैं, वहां अल्लाह ने एक कबीले के लोगों को भेज कर आबाद कर दिया।

इबराहीम अ0 ने बेटे का नाम इस्माईल रखा था। माँ बेटे को छोड़ कर अल्लाह के हुक्म से शाम वापस चले आये थे। हज़रत इसमाईल पलते बढ़ते रहे और हज़रत इबराहीम अल्लाह के आदेशानुसार जब तब मां बेटे को देखने आ जाते, जब इसमाईल बड़े हो गये तो अल्लाह ने इबराहीम को स्वप्न दिखाया कि वह अपने प्रिय पुत्र इस्माईल को ज़ब्ह कर रहे हैं। पैग़म्बरों (सन्देष्टाओं) का स्वप्न सच्चा होता है अतः वह समझे कि मुझे आदेश है कि इस्माईल को ज़ब्ह करें, अतएव अल्लाह के आदेश के अनुसार तैयार हो गये 100 वर्ष की आयु, इक्लौता सुन्दर तथा नेक एवं आज्ञाकारी बेटे को ले कर मक्के से मिना पहुंचे रास्ते में तीन जगहों पर शैतान ने इबराहीम को इस आदेश के अनुपालन से रोकने की कोशिश की तीनों जगह इबराहीम अ0 ने उसे कंकरियां मार कर भगा दिया इन जगहों पर हज करने वालों को 10,11,12 जिलहिज्ज को कंकरीयां मारने का आदेश है।

इबराहीम अ0 ने अपने पुत्र इस्माईल से अपना स्वप्न बताया, इस्माईल को तो पैग़म्बर होना था अल्लाह ने उनकी मदद की वह बोले अब्बा जान यह तो अल्लाह का आदेश है इसका अनुपालन कीजिए मुझे धैर्यवान पायेंगे, बाप बेटे राजी हो गये बाप ने आंख पर पट्टी बांधी बेटे को लिटा कर गले पर धार दार छुरी चला दी यह देख कर फिरिश्ते भी कांप उठे इबराहीम अ0 ने अपने स्वप्न में इतना ही देखा था कि वह बेटे को अल्लाह की रिज़ा के लिए ज़ब्ह कर रहे हैं, स्वप्न के अनुसार कर्म पूरा हो चुका था आवाज़ आई कि तुम ने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। अल्लाह को तो इस्माईल अलैहिस्सलाम को पैग़म्बर बनाना था उनकी सन्तान में अंतिम नबी को

लाना था उनकी जान बचा ली।

गले पर छुरी चलाने का जो परिणाम होता है वह हुआ, इबराहीम अ0 भी यही समझे कि मेरे प्रिय बेटे का गला अल्लाह की राह में कट चुका होगा, परन्तु अल्लाह का फैसला कुछ और था, जैसे ही इबराहीम अ0 ने बेटे के गले पर छुरी रखी अल्लाह ने हज़रत जिबरील अ0 को आदेश दिया कि जन्नत से एक मेंढा ले जाकर इस्माईल की जगह इस तरह लिटा दो कि इबराहीम को ख़बर न हो अतः ऐसा ही हुआ और छुरी मेंढे के गले पर चली जब इबराहीम अ0 ने आंखों से पट्टी खोली तो देखा कि इस्माईल अलग खड़े हैं और मेंढा ज़ब्ह किया हुआ पड़ा है। यह वाकिया तफसीरों में और तरह से भी है मैंने मौलाना अहमद सईद रह0 की तफ़सीर ''कश्फुर्रहमान'' से यह वाक़िया लिया है।

अल्लाह तआला ने इबराहीम अ0 से पुकार कर कहा तुम ने अपना स्वप्न सच कर दिखाया और चूंकि इस्माईल अ0 को ज़ब्ह होने से बचा दिया था उसके लिए अल्लाह तआला ने कहा ''हम उत्तमवादी को इसी प्रकार बदला प्रदान करते हैं'' अल्लाह तआला ने फरमाया हमने इबराहीम और इस्माईल और उनके (घर वालों) के जिक्र को आने वाली क़ौमों में जारी रखा जो हम को इस प्रकार दिखते हैंः—

नमाज़ में दुरूद में हम इबराहीम अ0 का जिक्र लाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने हज़ को इबराहीम के ज़रिए ही जारी किया था। हज में हम जमजम का पानी पीते हैं जो हज़रत इस्माईल और उनकी मां की यादगार है, हज में सफा मरवा के बीच दौड़ लगाते (सई) करते हैं ये हज़रत हाजर की याद है।

हज में मिना में शैतानों को कंकरियां मारते (रमी करते) हैं जो इबराहीम अ0 के अमल की यादगार है।

मिना में कुर्बानी करते हैं जो इबराहीम अ0 की ओर से मेंढा कुर्बान किया गया था यह उसकी यादगार है। आगे इबराहीम अ0 की बांझ पत्नी से इसहाक़ अ0 के पैदा होने का भी जिक्र है।

हज़रत इसहाक़ अ0 की सन्तान में पैग़म्बरी का सिलसिला जारी रहा कई पैग़म्बर हुए, मगर इस्माईल अ0 की सन्तान में पैग़म्बरों का सिलसिला रुका रहा अन्त में उनकी सन्तान में अन्तिम नबी हमारे सरकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा गया।

हज़रत इबराहीम अ0 का बयान पवित्र क़ुर्आन में बहुत ज़ियादा है हम इतने ही पर बस करते हैं इसलिए कि कुर्बानी की कहानी का बयान इतने ही में आ गया।

उन्हीं हज़रत इबराहीम अ0 की कुर्बानी की याद बाकी रखने के लिए अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा उनकी उम्मत के धनवानों पर कुर्बानी को अनिवार्य किया, हदीस शरीफ़ और फिक्ह की किताबों से ज्ञात होता है कि इस उम्मत में जो व्यक्ति धनवान हो (निसाब का मालिक) हो 10,11,12 जिलहिज्ज को शरई सफ़र पर न हो तो उस पर कुर्बानी वाजिब है। हदीसों से ज्ञात होता है कि कुर्बानी करने से जहां वाजिब अदा होता है वहीं बहुत बड़ा सवाब भी मिलता है, गोश्त भी खाएं और सवाब भी लें, धनवान लोग गोश्त तो खाते ही रहते हैं, जो निर्धन हैं वह निर्धनता के कारण गोश्त नहीं खा पाते कुर्बानी के दिनों में अल्लाह तआला उनको भी गोश्त खिला देता है। धनवानों को प्रेरित किया गया है कि वह अपनी कुर्बानी के गोश्त से गरीबों को भी गोश्त खिलाएं यानी कोशिश हो कि एक तिहाई गोश्त गरीब भाइयों को पहुंचा दें।

हमारे भारत में जैन व बौद्ध लोग दो ऐसे समुदाय हैं जिनके यहां मांसाहार वर्जित है उनके प्रभाव से बहुत से हिन्दू भाई मांसाहार को बुरा समझते हैं परन्तु संसार के दूसरे धर्मों ईसाई, यहूदी आदि के यहां मांसाहार वर्जित नहीं है, फिर भारत में भी अधिकांश हिन्दू मांसाहारी हैं, इस संसार में कोई किसी जीव को मारे बिना जीवित नहीं रह सकता ''जीव जीवे आहार'' मनुष्य और दूसरे जीवों में बड़ा अन्तर है इस अंतर को न समझने वाले ही मांसाहार का विरोध करते हैं, हम यहां इस बहस को नहीं छेड़ना चाहते हैं हम मुसलमान अल्लाह के आदेशों और उसकी अनुमति से कुछ निर्धारित पशु पक्षियों को इस्लामी तौर पर ज़ब्ह करके उनका मांस खाते हैं।

मछली और टिड्डी को बिना ज़ब्ह के खाते हैं और अल्लाह ही के आदेश से 10,11,12 जिलहिज्ज को कुर्बानी करते हैं, हमारे हिन्दू भाई तो जो मांसाहारी हैं वह अपने मन से जिस पशु को चाहते हैं उसको मार कर खाते हैं, मेरी जानकारी में उनके यहां मांसाहार के लिए कोई ईश्वरी विधान नहीं है, यद्यपि धार्मिक इतिहास में उनके यहां भी यज्ञ के अवसर पर पशुओं के बलिदान का वर्णन मिलता है परन्तु अब यज्ञ में पशुओं का बलिदान नहीं होता यह बौद्ध धर्म और जैन धर्म के प्रभाव से हुआ है। भारत में आज भी कोल, भील, द्रविण, कोरी, पासी, रैदास, छत्री आदि सब मांसाहारी हैं।

❖❖❖

—पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व महब्बत में क़ौम का कल्याण है:—

जब सभ्यता अपनी सीमाओं से परे निकल जाती है, जब वह नैतिकता को एकदम भुला देती है, जब इन्सान अपनी तुच्छ इच्छाओं और नफ़्स (काम) के हैवानी अपेक्षाओं की पूर्ति के अलावा हर मक़सद और हर हक़ीक़त को भुला देता है, जब उसके पहलू में इन्सान के दिल के बजाये भेड़िये और चीते का दिल पैदा हो जाता है, जब उसके शरीर में एक फर्जी पेट और एक असीम बुरे काम करने की प्रवृत्ति जन्म लेती है, जब दुन्या पर पागलपन सवार होता है, तो कुदरत उसको सजा देने या उसके पागलपन के नशे को उतारने के लिए नये—नये नश्तर और नये—नये जर्राह पैदा करती है—

करती है मुलूकियत अन्दाजे जुनूं पैदा,
अल्लाह के नश्तर हैं तैमूर हो या चँगेज़।

आप मुलूकियत (बादशाहत) के शब्द को सभ्यता से बदल दीजिए कि सभ्यता का बिगाड़ और उसका जुनून, मुलूकियत के जुनून से ज़ियादा ख़तरनाक और अधिक व्यापक होता है। एक कमज़ोर सा मरीज अगर पागल हो जाता है तो मुहल्ले की नींद हराम कर देता है, और पूरा मुहल्लाह अ़ज़ाब से ग्रस्त हो जाता है। आप कल्पना कीजिए कि जब मानव—जाति पागल हो जाये, जब इन्सानियत का मिज़ाज ख़राब हो जाये तो इसका क्या इलाज है। जाहिलियत में सभ्यता सिर्फ बिगड़ी ही नहीं थी उसमें सड़ाहिन्द (तअफ़्फ़ुन) पैदा हो गयी थी, उसमें कीड़े पड़ गये थे। मानव—जाति का शिकारी बन गया था। उसको किसी इन्सान की जांकनी, किसी घायल की तड़प और किसी पीडित की कराह में वह मज़ा आने लगा था जो प्याले व सुराही में, और दुन्या के स्वादिष्ट खाने और सुन्दर दृश्य में नहीं आता था। आप रोम का इतिहास पढ़ें। जिसकी विजय, शान्ति— व्यवस्था और विधि—रचना और सभ्यता के दुन्या में डंके बजे। योरोप के इतिहासकार उसके बारे में लिखते हैं कि "रोम वासियों के लिए सबसे अधिक रोचक और मस्त कर देने वाला दृश्य वह होता था जब आपस में तलवार के वार का खूंख्वार जानवरों की लड़ाई में पराजित और घायल गलैडियेटर जांकनी की तकलीफ से तड़प रहा होता, उस समय रोम के रईस और ज़िन्दा दिल तमाशाई इस आनन्ददायी दृश्य को देखने के लिए एक दूसरे पर गिर

पड़ते, और पुलिस के लिए भी उनको कन्ट्रोल में रखना सम्भव न होता।''

हिस्ट्री आफ योरोपियन मारल्स—लेकी

(तारीखे अख़लाक यूरोप)

रूमी काल की जल्लादी, जिसमें इन्सान को जानवरों से लड़ने पर मजबूर किया जाता था, इन्सान के पत्थर दिल होने की बद्तरीन मिसाल पेश करती है। लेकिन, इन खेलों की लोकप्रियता बयान करते हुए लिखता है।

''जल्लादी की यह लोकप्रियता इस लेहाज से कदापि आश्चर्यजनक नहीं कि मनोरंजन के जितने दृश्य इसमें आ कर एकत्र हो गये थे उतने किसी दूसरे खेल तमाशे में न थे। लक व दक अखाड़ा, रईस लोगों की जर्क व बर्क अच्छी—अच्छी पोशाकें, तमाशाइयों की भीड़, इतनी बड़ी भीड़ अपेक्षित खामोशी, अस्सी हज़ार ज़बानों से एक साथ 'शाबाश' निकलना, जिसकी आवाज़ से शहर गूंज पड़ता, लड़ाई का घड़ी—घड़ी रंग बदलते रहना, अद्वितीय साहस, इनमें से हर चीज़ प्रभावित करने के लिए काफी है।

इन अत्याचारी खेल तमाशों को रोकने के लिए आदेश जारी किये गये, लेकिन यह बाढ़ इतनी जोर पर थी कोई बन्धा उसे रोक नहीं सकता था।

अतएव जाहिलियत की असल समस्या यह थी कि पूरी ज़िन्दगी की चूल अपनी जगह से हट गयी थी, बल्कि टूट गई थी, इन्सान, इन्सान नहीं रहा था। इन्सानियत का मुकदमा अपने अंतिम चरण में खुदा की अदालत में पेश था। इन्सान अपने ख़िलाफ गवाही दे चुका था। इस हालत में ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुन्या में भेजा और कहा गया—

अनुवादः—*और हमने अपको दुन्या के लिए रहमत बना कर भेजा है।*

(सूरः अल—अंबिया 107)

हक़ीक़त यह है कि हमारा यह दौर बल्कि क़यामत तक पूरा दौर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय, दावत और सदप्रयासों के हिसाब में है। आपका पहला काम यह था कि आपने उस तलवार को जो मानव जाति के सर पर लटक रही थी और कोई घड़ी थी कि उसके सर पर गिर कर उसका काम तमाम कर दे, उस तलवार को हटा लिया। और उसको वह उपहार दिये जिन्होंने उसको नया जीवन, नया हौसला, नई ताक़त, नई इज़्ज़त और सफलता की नई मंज़िल प्रदान की और उनकी बरकत से इन्सानियत, सभ्यता व संस्कृति, कला, कौशल, ज्ञान, अध्यात्म व निष्ठा और इन्सानियत की रचना का एक नया दौर शुरु हुआ। हम

यहां पर आपके द्वारा दी गई उन चीज़ों का उल्लेख करते हैं, जिन्होंने मानव—जाति के मार्गदर्शन व सुधार तथा मानवता के विकास में बुन्यादी किरदार अदा किया और जिनकी बदौलत एक नई दुन्या वजूद में आई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे बड़ा उपकार यह है कि आपने दुन्या को तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक़ीदा (विश्वास) का वरदान दिया। इससे अधिक क्रांन्तिकारी, जीवनदायी और चमत्कारिक अक़ीदा (विश्वास) दुन्या को न पहले कभी मिला है और न क़यामत तक कभी मिल सकता है, यह इन्सान जिसको शायरी, फलसफ़ा और सियासत में बड़े—बड़े दावे हैं, और जिसने क़ौमों, मुल्कों को बार—बार गुलाम बनाया, चारों तत्वों पर अपनी हुकूमत चलाई, पत्थर में फूल खिलाये और पहाड़ों का जिगर काट कर दरिया बहाये और जिसने कभी— कभी खुदाई का भी दावा किया, यह अपने से कहीं अधिक विवश व हीन, बेहिस व हरकत, बेजान व मुर्दा और कभी—कभी स्वयं अपनी बनाई हुई चीज़ों के सामने झुकता था। यह पहाड़ों, नदियों, पेड़ों, जानवरों, आत्माओं व शैतानों तथा कुदरत के मज़ाहिर (बाह्य रूपों) ही के सामने नहीं बल्कि कीड़े मकोड़ों तक के सामने सिर नवाता था और उसकी पूरी ज़िन्दगी उन्हीं से भय व आशा और इन्हीं खतरों में बसर होती थी, जिसका नतीजा कायरता, मानसिक तनाव, अंध विश्वास और अविश्वास था। आपने उसको ऐसे विशुद्ध, सहज, जीवनदायी तौहीद के अक़ीदा की शिक्षा दी जिससे वह ख़ुदा के अलावा, जो सृष्टा है, हर एक से आज़ाद निडर और निश्चिन्त हो गया। उसमें एक नई शक्ति, नया हौसला, नया शौर्य और नई वहदत पैदा हुई, उसने सिर्फ़ खुदा को असली मालिक, जरूरतों को पूरा करने वाला और नफ़ा—नुकसान पहुंचाने वाला समझना शुरु किया इस नई खोज से उसकी दुन्या बदल गयी। वह हर प्रकार के बेजा ख़ौफ़ और हर तरह के तनाव से सुरक्षित हो गया। वह खुदा के अलावा हर प्रकार की गुलामी से छुट्टी पा गया। उसको अनेकता में एकता दिखने लगी। वह अपने को सारी सृष्टि से उत्तम, सारी दुन्या का सरदार और व्यवस्थापक और सिर्फ ख़ुदा का अधीन और आज्ञापालक समझने लगा। इसके नतीजे में इन्सान की प्रतिष्ठा कायम हुई जिससे पूरी दुन्या वंचित हो चुकी थी।

जारी..........

❖❖❖

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

उ़मर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह0

ख़ुलफ़ाए राशिदीन (चारों ख़लीफ़ा) और उनके हाकिमों तथा राज्यधिकारियों की जनसेवा तथा जनता के प्रति सहानुभूति का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। इसी क्रम में हज़रत उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ रह0 की भी कुछ घटनाओं का उल्लेख कर देना उपयुक्त मालूम होता है, क्योंकि हज़रत उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ रह0 भी उन्हीं महानुभावों में हैं जिनका जीवन इस्लाम का क्रियात्मक रूप है। उनका युग यद्यपि ख़िलाफ़त राशिदा के बहुत बाद का है किन्तु अपने पवित्र तथा न्यायशील चरित्र के कारण आपकी गणना खुलफ़ाए राशिदीन ही में की जाती है। उनका जीवन– चरित्र बाद के लोगों के लिए आदर्श है।

हज़रत उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ रह0 राज्य को व्यक्तिगत सुख तथा आनन्द का साधन नहीं समझते थे अपितु जनता की सेवा करने का अवसर समझते थे। उनके निकट यह इतना बड़ा उत्तरदायित्व था कि उसके ध्यान से कांप उठते थे। इसी अनुभूति का परिणाम था कि जब उन्हें ज्ञात हुआ कि वह ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए हैं तो उनके मुख से सहसा ''या अल्लाह'' के शब्द निकल पड़े। ऐसा मालूम होता था कि ख़िलाफ़त की सूचना कोई महान दुर्घटना है। लोग ख़लीफ़ा हो जाने की बधाई दे रहे थे और यहां यह दशा थी कि सिर दोनों घुटनों के बीच झुका हुआ था और निरन्तर रोते जा रहे थे। कुछ देर यही दशा रही, फिर सिर उठाया, आँखों से आँसू पोंछे और अपने स्वामी की ओर मुँह करके प्रार्थना की–

''ऐ अल्लाह! मुझे बुद्धि प्रदान कर, जिससे मुझे लाभ हो। जिसकी ओर मुझे जाना है (अर्थात आख़िरत) उसे मेरी नज़र में उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बना दे, जो मुझ से छूटने वाली है (अर्थात दुन्या) और उसका मोह मेरे हृदय से निकाल दे।''

पहला आदेशः–

इससे पूर्व के सम्राटों तथा महाराजाओं का यह नियम था कि जब कोई नया सम्राट अथवा राजा गद्दी पर विराजमान होता था तो उत्सव मनाया जाता, तम्बू क़नातें लगाई जातीं, भव्य सवारियाँ भेंट की जातीं, सुन्दर वस्त्र और बहूमूल्य वस्तुएं प्रस्तुत की जाती थीं। सारांश यह है कि प्रत्येक नया सम्राट तथा राजा का प्रथम समारोह ऐसा विराट

और वैभवशाली होता है कि दीर्घकाल तक लोग उसकी प्रतिष्ठा तथा वैभव को याद करते रहें और प्रयत्न यही होता है कि नये राजा का समारोह पहले राजाओं से कहीं अधिक बढ़—चढ़ कर हो। हज़रत उमर रज़ि0 ख़लीफ़ा हुए तो उनके सामने भी यही मसला पेश किया गया। परन्तु यहां तो दृष्टिकोण ही दूसरा था। उन्हें शान—शौकत तथा समारोहों से क्या सम्बन्ध। आदेश दिया गया कि समस्त वस्तुएं तथा धन बैतुल माल में जमा कर दिया जाये और देशवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यय किया जाय।

सम्मान हेतु खड़े होना निषेधः–

गत सम्राटों में यह प्रथा थी कि लोग उन्हें देख कर आदर तथा सम्मान हेतु खड़े हो जाते थे। आपकी ख़िलाफ़त में भी लोगों ने पुरानी रीति—रिवाज बरतनी चाही, परन्तु आपने सख़ती से माना कर दिया कि मेरे लिए खड़े होने की आवश्यकता नहीं, यह तो केवल अल्लाह को ही शोभा देता है।

लोगों ने चाहा कि कम से कम, सलाम ही पहले कर लें किन्तु आपने इसकी भी अनुमति न दी। द्वारपालों तथा अन्य कर्मचारियों को इससे रोक दिया गया और साफ़ कह दिया कि तुम लोग मुझे सलाम करने में पहल न किया करो। यह मेरा कर्तव्य है कि मैं तुम्हें पहले सलाम करूँ। इससे आपका यह अभिप्राय था कि सामान्य तथा साधारण पुरुष के हृदय में हीनता का आभास शेष न रह जाये अपितु प्रत्येक मनुष्य के अन्दर आत्म—सम्मान का भाव उत्पन्न हो और उसे इस्लामी सभ्यता का अनुमान हो सके।

दरबारियों को आदेशः–

जो लोग उनकी सेवा में उपस्थित होते उन्हें विशेष रूप से चेतावनी देते कि मेरे सामने किसी की बुराई न बयान करो बल्कि ज़रूरतमन्दों तथा दुखी एवं पीड़ित लोगों की सूचना दो। न्याय तथा इन्साफ़ का वातावरण उत्पन्न करने की चेष्टा करो और अत्याचारों के निवारण सम्बन्धित उपाय बताओ। सत्यता का साथ दो और अगर कोई इन कर्तव्यों का पालन न कर सके तो फिर उसे मेरे पास आने की आवश्यकता नहीं।

पहला व्याख्यानः–

ख़लीफ़ा चुने जाने के बाद पहले ही व्याख्यान में स्पष्ट रूप से कह दिया ‘‘मैं तुम्हीं में का एक व्यक्ति हूँ और तुमसे किसी प्रकार भी उत्तम नहीं हूं अलबत्ता मेरे ऊपर उत्तरदायित्व का भार तुमसे अधिक लदा हुआ है। मैं राजपाट से न स्वयं लाभ उठाना चाहता हूँ और न अपने परिवार में से किसी को इसका उपभोगी होने देना चाहता हूँ। मेरी यही व्यवस्था है कि न्याय तथा इंसाफ़ के साथ तुम्हारी सेवा करूँ, परन्तु सत्य मार्ग पर

चलना यदि मेरे लिए सम्भव न हो तो फिर चाहता हूं कि एक क्षण भी जीवित न रहूँ।''

ख़लीफ़ा होते ही सर्वप्रथम पीड़ितों का कष्ट दूर करने की चिन्ता हुई। इस विषय में दूसरों से कहने से पूर्व अपने कुटुम्बियों तथा सम्बन्धियों की ओर पहले ध्यान गया और तमाम वह धन व सम्पत्ति, जो उनके विचार से ज़बरदस्ती प्राप्त की गई थी, छीन–छीन कर उनके पूर्व अधिकारियों को वापिस कर दिया।

यदि असली मालिक न मिल सका तो यह धन राजकोष में दाख़िल करा दिया ताकि समस्त प्रजा के हित के लिए व्यय हो।

निजी सम्पत्ति भी बैतुलमाल में:–

इस सिलसिले में अपनी समस्त सम्पत्ति तथा सारा धन बैतुलमाल को समर्पण कर दिया। यद्यपि किसी ओर से भी इस सम्पत्ति के निषिद्ध होने का कोई भी स्पष्ट कारण न था। परन्तु चूंकि यह भूतपूर्व अत्याचारी शासकों के युग में प्राप्त कर लिया ताकि कोई व्यक्ति यदि अनायास ही आक्षेप लगाना चाहे तो भी उसे इसका अवसर न मिले।

पत्नी के आभूषण बैतुलमाल में दाख़िल कर दिएः–

उनकी धर्मपत्नी फ़ातिमा, अब्दुल मलिक (पूर्व शासक) की बेटी थीं। बाप ने उन्हें जो ज़ेवर दिया था उसके बारे में भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता था कि वह अवैध है। चूंकि उसमें भी सन्देह था, अतः बीबी को आदेश दिया कि वह अपने ज़ेवर भी बैतुलमाल में दाख़िल कर दें। यद्यपि बीबी, अब्दुल मलिक की सुपुत्री थीं फिर भी उनके स्वभाव तथा आचार–व्यवहार पर पति की छाप अधिक थी। तुरन्त राज़ी हो गईं और ज़ेवर उतार कर दे दिए। जब हज़रत उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ रह0 का देहान्त हो गया और उनके स्थान पर स्वयं फ़ातिमा का भाई यज़ीद बिन अब्दुल मलिक गद्दी पर बैठा तो उसने बैतुलमाल से वह ज़ेवर निकाल कर बहन को भिजवा दिए, परन्तु उस सुशील स्त्री ने स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और कहा, ''जो वस्तु उनके (पति) जीवन काल में छोड़ चुकी हूँ अब उनके बाद भी नहीं अपना सकती।''

पीड़ितों का दुख–दर्दः–

पीड़ितों को आपत्तियों से छुटकारा दिलाने की इतनी चिन्ता था कि निरन्तर इस खोज में रहते थे कि पता चले कि किस दिन तथा किस ग़रीब को भूतपूर्व शासकों तथा उनके अत्याचारी हाकिमों से दुःख पहुंचा है, ताकि उनकी क्षतिपूर्ति का प्रयास करें। इस विषय में एक घोषणा करा दी कि जो व्यक्ति किसी अत्याचार की यथोचित सूचना उन तक पहुचायेगा उसे एक सौ से तीन सौ दीनार तक का

पारितोषिक प्रदान किया जायेगा। अत्याचरों के विनाश हेतु अति शीघ्रता बरतते थे। एक बार की घटना है कि एक स्त्री आपकी सेवा में उपस्थित हुई और अपना हाल बयान किया। आपने उससे कहा, ''सांयकाल तुम्हारे मामले का फ़ैसला कर दूंगा।'' औरत वापस जाने लगी। अभी कुछ ही दूर गई होगी कि पुकार कर वापस बुलाया और कहा, ''मालूम नहीं सायंकाल तक जीवित रहूं या इससे पूर्व ही मौत आ जाये। आओ, इसी समय इस मामले को तय कर दूँ।

एक घटनाः–

एक व्यक्ति दूर से अपनी शिकायत लेकर आया। आपने उसको ध्यान से सुन कर मामले की जांच की और उसकी सम्पत्ति उसे वापस दिये जाने का आदेश दिया। जायदाद बहुत बड़ी थी, वह मनुष्य प्रसन्नचित हो वापस जाने लगा। आपने उसे बुला कर पूछा कि अपने स्थान से यहां तक आने में तुम्हारा क्या ख़र्च हुआ? मेरी इच्छा है कि तुम्हें सफ़र–ख़र्च भी दिया जाये। उस व्यक्ति ने कहा, अमीरुल–मोमिनीन, यही क्या कम है कि मेरी इतनी बड़ी सम्पत्ति आपने वापस दिला दी, अब सफ़र ख़र्च की कोई आवश्यकता नहीं। लेकिन आपने कहा, ''नहीं यह भी तुम्हारा अधिकार है। चूंकि तुम पीड़ित थे अतः न्याय–वाचन हेतु जो कुछ तुम्हें व्यय करना पड़ा, वह भी तुम्हें मिलना चाहिए।'' उसने फिर कहा, अमीरुल मोमिनीन, मुझे तो याद भी नहीं कि मैंने यात्रा में कितना व्यय किया। आपने कहा, कुछ तो अनुमान होगा ही, सोच कर बताया, साठ दिर्हम। आपने उसे साठ दिर्हम अपने पास से दिए और कहा कि इसे मार्ग में व्यय करना।

अत्याचारों के विनाश में इतनी अभिरुचि का यह परिणाम हुआ कि इराक़ का समस्त कोष ख़ाली हो गया लेकिन आपकी ललाट पर बल तक न पड़ा और यह पद्धति नियमानुसार प्रचलित रही। इसके अतिरिक्त और धन शाम से भिजवाया ताकि उत्पीड़ितों को दिया जाय। आपके इस आचरण का यह परिणाम हुआ कि समस्त देश में जुल्म तथा अत्याचार का कोई चिन्त शेष न रहा और प्रजा सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत करने लगी।

टैक्स मंसूख़ (बन्द):–

हर प्रकार के टैक्स तथा अनुचित आय बन्द कर दी और चेतावनी दे दी कि किसी भी व्यक्ति से, चाहे उसका व्यापार कितना ही बड़ा हो, किसी प्रकार का टैस न लिया जाए और न भवन सम्बन्धि सामग्री पर कोई चुंगी ली जाय। जल तथा थल हर प्रकार के रास्ते स्वतन्त्रतापूर्वक व्यापार करने के लिए खुले थे।

❖❖❖

जारी............

दिल व ज़बान की हिफ़ाज़त

–मौलाना सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
–हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

ज़बान दराज़ी (दुर्मुखता) और कीना परवरी, मन में द्वेष बात बात पर लड़ाई झगड़ा करना, ऐसी बातों पर ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़े सख़्त अल्फ़ाज़ फरमाये हैं, इस सिलसिले में लोगों में मुख़्तलिफ क़िस्म के आदमी पाये जाते हैंः–

1. बाज लोग इतने गुस्से वाले होते हैं कि उल्टी सीधी बात पर लड़ पड़ते हैं जो मुंह में आता है बकते रहते हैं, और सामने वाले को बुरा भला कहते हैं, गाली गलोज पर उतर आते हैं, ऐसे शख़्स के मुतअल्लिक़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''अपने भाई को गाली न दो, ऐसा न हो कि अल्लाह उस पर रहम कर दे और तुम को उसमें मुब्तला कर दे'' (जो तुम ने उसको कहा है)। दूसरी जगह फरमाया है– ''लानत करने वाले कियामत में न किसी की सिफारिश कर सकेंगे और न किसी के गवाह बन सकेंगे अगर किसी से कभी कोई जुम्ला निकल जाये जिससे दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचे तो उसके लिए दुआ करे और उससे मुआफी मांगे''।

2. बाज़ लोगों की आदत होती है कि वह गुस्से में आ कर इन्सान तो इन्सान जानवर, हवा, दरख़्त, ज़माना और उन जैसी चीज़ों आदि को गाली देने लगते हैं जो हद दर्जे हंसी उड़ाने वाली बात है, हदीस शरीफ़ में आता है ''रात और दिन, चाँद, सूरज और हवा को गाली न दो इस लिए कि वह कुछ लोगों के लिए रहमत हैं और कुछ लोगों के लिए अज़ाब''।

3. बाज आदमी इतने निर्भय होते हैं कि वह ज़िन्दों को छोड़ कर मुर्दों को भी बुरा भला कहते हैं, यह कितनी बुजदिली की बात है कि जो ज़वाब न दे सकें उन को गाली दी जाये, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''मुर्दों को बुरा मत कहो, इसलिए कि उन्होंने जो कुछ किया था पा लिया''।

दूसरी जगह फरमाया ''अपने मुर्दा भाइयों की भलाइयों का ज़िक्र करो, उनकी बुराइयों को नज़र अन्दाज़ करो''।

ग़रज़ की इन्सान को अपने दिल व ज़बान की बे बाक़ी, (निर्भयता), कीना परवरी (मन में द्वेष), गुसताख़ी (अशिष्टता) सख़्त कलामी (वचन की कठोरता) दिल आज़ारी और फिस्क़ व कुफ़्र के शब्दों से बचना चाहिए, किसी को जल्दी से गुमराह (पथ भ्रष्ट) न कह देना चाहिए, फ़ासिक़ व फाजिर कह देना

बाज दफ़ा वबाले जान बन जाता है, आख़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद सुनते जाइऐ ''कोई आदमी किसी आदमी पर फ़िस्क़ या कुफ्र की तुहमत न लगाये अर्थात उसे फ़ासिक (बड़ा पापी) या काफिर (नास्तिक) न कहे अगर वह शख्स जिस पर तुहमत लगाई गई उसका मुसतहिक (अधिकारी) नहीं है तो वह तुहमत लगाने वाले पर लौट आती है।''

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा ....

4. पैग़म्बर का यह दावा नहीं होता कि सारे खज़ाने उसके पास हैं वह ग़ैब की सब बातें जानता है या वह मानव जाति के अलावा कोई और प्रजाति है फिर इसके बाद तरह तरह के मुअजिजों (चमत्कारों) की मांग करना और उसके मानने और झुठलाने का मानक बनाना कहां तक ठीक हो सकता है।

5. यद्यपि पैग़म्बर मानव जाति से अलग कोई जाति नहीं लेकिन उसके और बाकी इन्सानों के बीच ज़मीन व आसमान का अंतर है जैसे देखने वाले और अंधे का अन्तर है पैग़म्बर के दिल की आँखें हर समय अल्लाह की खुशी और उसके प्रकाश के लिए खुली रहती हैं जिनको प्रत्यक्ष रूप से देखने से दूसरे मनुष्य वंचित हैं।

6. काफ़िरों के कुछ सरदारों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि आपकी बात सुनने को हमारा दिल चाहता है मगर आप के पास तुच्छ लोग बैठते हैं हम उनके साथ बराबर नहीं बैठ सकते, इस पर यह आयत उतरी कि उनके इस बाहरी हाल का लिहाज़ ज़रूरी है अगर आप धनवानों की हिदायत (संमार्ग प्राप्ति) की चाहत में उनको अपने पास से हटाएंगे तो अन्याय होगा, न उनका हिसाब आपके ज़िम्मे है और न आपका हिसाब उनके ज़िम्मे है, खोज में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

7. धनवानों को गरीबों से आज़माया वे उनको तुच्छ समझते हैं और अल्लाह के यहां वही सम्मानित हैं।

8. करीब में ''व अंजिर बिहिल्लजीना यखाफून.....'' में डराने का काम हो चुका था यहां ईमान वालों के लिए शुभ समाचार व कुशल मंगल और रहमत (दयालुता) का उल्लेख है।

9. यानी मैं अल्लाह की ओर से भेजा गया हूँ सत्य के प्रमाण मेरे पास हैं तुम कितने ही बहाने करो मैं तुम्हारी इच्छाओं पर नहीं चल सकता, अब मानना और न मानना तुम्हारा काम है और जिस अज़ाब (दण्ड) की तुम्हें जल्दी है मैं उसका मालिक नहीं हूँ, वह जिस पर चाहे अज़ाब करे और जिसको चाहे तौबा की तौफीक़ (सामर्थ्य) प्रदान करे उसकी रीतियों को वही जानता है, सब फैसले उसी के अधिकार में हैं।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कर्ज़दार

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

बाज़ार का रुख़ किये दो साथियों में से एक ने राह चलते किसी को आवाज़ दी, अरे भाई! इधर तो आओ! दूसरे साथी ने पूछा, आप किसे बुला रहे हैं? पहले ने कहा, उन्हें ही जो अब हमारी ओर आ रहे हैं। तुम ने देखा नहीं, जब उन्होंने हमें देखा तो पलट गए और रास्ता बदल कर गली में जाने लगे। दूसरे दोस्त ने कहा, हाँ! देखा तो मैंने भी, लेकिन हमें इससे क्या? रास्ते में सैकड़ों लोग आते—जाते हैं। पहले साथी ने कहा, तुम्हें भले ही मतलब न हो, मगर मुझे मतलब है।

वह आदमी जिसने रास्ता बदल लिया था, बोझल कदमों से लजाते हुए उन दोनों के पास आया। पहले साथी ने जिन्हें दुन्या इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के नाम से जानती है, उसने आने वाले व्यक्ति से पूछा भाई! मुझे देख कर तुमने रास्ता क्यों बदल लिया, अफसोस कि भेंट करने वालों में से हो? फिर भी मुलाक़ात से घबरा गए।

उस आदमी ने कहा, हज़रत! आपको सलाम करने के लिए आगे बढ़ न सका, इसका मुझे अफसोस और शर्मिन्दगी है, लेकिन हज़रत! मैं क्या करता, मेरे कदम ख़ुद ही गली की ओर उठ गए, आप दिल पर न लें, आपके दस हज़ार दिरहम जो मैंने कर्ज़ लिये हैं, बहुत जल्द लौटा दूँगा।

इमाम साहब के साथी हज़रत शफीक़ बल्खी रह0 को अब सारा माजरा समझ में आया कि मामला कर्ज़ का है और समय पर कर्ज़ चुका न सकने के कारण ये छुपता फिर रहा है।

कर्ज़ भी बड़ी अजीब चीज़ है। किसी से ले लो तो कभी आँखें नहीं उठा पाता यदि समय पर चुका न पाया तो लोग आखें ज़मीन में धंसाने की कोशिश करते हैं। मेरी समझ से कर्ज़ दो तरह का होता है, एक जीविका से सम्बन्धित दूसरा झूठी शान से जुड़ा हुआ। जैसे इस्लाम में शादी सादगी से करने की ताक़ीद है लेकिन झूठी शान के चक्कर में भारी कर्ज़ ले लिया और ज़िन्दगी भर चुका रहा है। कइयों के बारे में सुना गया है कि बिरादरी में नाक ऊँची करने के लिए कर्ज़ ले लिया और ज़िन्दगी भर चुकाते—चुकाते मर गए और संतान के ज़िम्मे क़र्ज़ विरासत में दे गए।

हाँ! जो कर्ज़ बड़ी मजबूरी में लिया जाता है तो इसमें अल्लाह भी उसकी मदद करता है, लेकिन जिससे कर्ज लिया है उसे चुकाना ज़रूरी है।

शेष पृष्ठ..28... पर

भिखारी और मुआशरे की जिम्मेदारी

—अबू ओमामा

हमारे मुआशरे का एक तबक़ा अर्थातः—भीख मांगने वाले फक़ीरों का, तवज्जोह बराए तरक़्क़ी व इस्लाह से महरूम रहा है। नतीजा ये हुआ कि बहुत से मांगने वाले आदतन भीख मांगने को पेशा बना कर जी रहे हैं और कुछ हक़ीकतन ज़िन्दा रहने के लिए भीख मांग रहे हैं। जब कि कोई भी मज़हब या मुआशरा दूसरों के आगे हाथ फैलाने या फिर भीख मांगने को कभी पसंद नहीं करता है और न ही इस अमल को अच्छा तस्लीम करता है। लेकिन आप अगर ग़ौर करें तो भीख मांगने वालों में आपको मुस्लिम फक़ीरों की तादाद ज़ियादा नज़र आएगी। मस्जिदों के इर्द गिर्द गली मोहल्लों में भी दाढ़ी वालों में आपको मुस्लिम फक़ीरों की तादाद ज़ियादा नज़र आएगी। मस्जिदों के इर्द गिर्द गली मोहल्लों और बाज़ारों में घूम घूम कर ये लोग भीख मांगते नज़र आएंगे। हद तो यह है कि गैर मुस्लिम इलाक़ों में भी दाढ़ी रखे टोपी लगाए भीख मांगते मर्द, बुर्का पहने भीख मांगती औरतें भी नज़र आ जाती हैं। यह सूरते हाल बाइसे फिक्र है। हिन्दुस्तान में मुसलमानों की कुल आबादी 20 करोड़ बताई जाती है 20 करोड़ में से मुसलमानों की जिस क़दर तादाद भीख मांगती है, उसको देखें और फिर हिन्दुस्तान की 90 करोड़ गैर मुस्लिम आबादी में से लोगों की जितनी तादाद भीख मांगती है उनकों देखें, और फिर इन दोनों का मुवाज़ना करें तो आप पायेंगे कि 20 करोड़ में भीख मांगने वालों की तादाद 90 करोड़ में भीख मांगने वालों की तादाद से ज़ियादा है। इससे जाहिर होता है कि मुसलमानों में कुछ हद तक गुर्बत और तालीम की कमी इस ज़ियादा तादाद की वजह है पर ये तादाद जितनी ज़ियादा है इसके लिए गुर्बत और तालीम के अलावा मांगने वालों में भीख मांगने की बढ़ती आदत भी ज़िम्मेदार मालूम होती है। बिला शुबहा इसकी कुछ और भी वजहें हो सकती हैं। इसे देखने की ज़रूरत है। सिक्खों को मैंने कभी भीख मांगते नहीं देखा और न ही इसाईयों को। आमतौर पर एक दूसरे की मदद करना, दूसरों के काम आना, दूसरों की ज़रूरत पूरी करने पर हर मज़हब और मुआशरे में बहुत ज़ोर दिया गया है। मगर यह बात भी सच है कि दूसरो के आगे हाथ फैलाना, भीख मांगना, दस्तेसवाल दराज करने के अमल को न तो मज़हब ने और न ही मुआशरे ने पसंद की नज़र से देखा है। फिर ऐसा क्यों है कि मांगने वालों में मुस्लिम तादाद ज़ियादा है। भीख मांगने वाले ये लोग, भीख हासिल करने के लिए एक शहर से दूसरे शहर, और कुछ तो एक सूबे से दूसरे सूबे और यहां तक कि बेरूने मुल्क भी चले जाते हैं। हद तो यह है कि माहे रमज़ान और हज के मौक़े पर मांगने वाले ये भिखारी सऊदी अरब तक चले

जाते हैं और दीगर मुल्कों का भी सफर कर डालते हैं। यह किस तरह के ग़रीब/फ़क़ीर और ज़रूरतमंद लोग हैं। और पूरे क़ायनात की ज़रूरत पूरी करने की कुदरत रखता है। मांगने वालों से बुरा सुलूक करने

ख़ुदा महफ़ूज़ रखे हाथ फैलाने की ज़िल्लत से
अना मजरूह होती है, और इज़्ज़त रूठ जाती है

ये सच है कि भीख मांगने के अमल को नापसंदीदा अमल तस्लीम किया गया है। इससे इंसान का वक़ार गिरता है। लेकिन गुर्बत और तंगी की वजह से इंसान इतना तंग और मजबूर न हो जाए कि उसकी अपनी ज़िन्दगी अज़ाब लगने लगे लिहाज़ा किताबों में यह भी लिखा है कि अगर कोई तुमसे कुछ मांगे/तुम्हारे सामने दस्तेसवाल दराज़ करे तो तुम उसकी मदद करो, और अगर मदद नहीं कर सकते तो अच्छे अख़लाक़ का सबूत देते हुए नरमी से माज़रत कर लो। यह अल्लाह का खास करम है कि मांगने वाले ज़रूरतमंद की मदद के लिए उसने आपको चुना, वरना तो अल्लाह अकेला ही उसकी और उसकी जायज़ परेशानी को समझते हुए, मदद की कूवत रखते हुए, मांगने वाले ज़रूरतमंद की मदद न करने के लिए रोज़े आख़िरत अल्लाह गिरिफ़्त कर सकता है। यहां ये बात क़ाबिले ग़ौर है कि एक तरफ़ मांगने के अमल को ख़राब और गिरा हुआ फेल माना जा रहा है वहीं दूसरी तरफ़ इस बात की भी ताकीद की गयी है कि जब कोई मजबूर शख़्स किसी के आगे दस्तेसवाल दराज़ करे तो साहबे हैसियत को चाहिए कि उसे मायूस न करे। ऊपर मजकूरा इन नुक़्तों को अगर भीख मांगने वाले और भीख देने वाले उसकी सही स्क्रिप्ट को समझें तो मांगने वाले भीख मांगने से गुरेज़ करेंगे। सिर्फ़ ऐसे ही कुछ लोग किसी दूसरे के आगे दस्ते सवाल दराज़ करेंगे जो वाकई अपनी मामूली से मामूली ज़रूरत हत्ता की अपने खाने पीने के इन्तज़ाम करने की कूवत नहीं रखते हैं। भीख देने वाले भी बग़ैर किसी ताम्मुल मांगने वालों का ख़्याल करेंगे। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि मांगने वालों की एक बड़ी तादाद मेहनत और काम करने से जी चुराती है और बिला उज्र आदतन भीख मांगने की आसान राह इख़्तियार कर लेती है। भीख देने वाले भी नेकी और सवाब के ख़्याल से अक्सर मांगने वालों को मायूस नहीं करते हैं। शायद इस वजह से भी मांगने वालों की तादाद बढ़ती जा रही है। मांगने के अमल को डिकरेज किए जाने और भीख देने में फैय्याज़ी करने के अन्दर जो हिकमत है, उसकी सही स्क्रिप्ट को समझने और समझाने की ज़रूरत है। हिन्दी के मशहूर कवि रहीम का ये दोहा यहां बहुत ही मौजू है।

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहुं मागन जाहि
उन्ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।

इस दोहे में रहीम कहते हैं कि वो शख़्स समझिए मर गया जो किसी के सामने मांगने के लिए हाथ फैलाता है। मांगने वाला जिस शख्स के सामने दस्ते सवाल दराज करता है अगर वो शख़्स मांगने वाले को मायूस करे या देने से इंकार करता है तो मांगने वाले शख़्स से पहले मायूस या इंकार करने वाले शख्स को मरा समझिए। रहीम ने ये अहम और बड़ी बात अपने इस दोहे के ज़रिए समझाने की कोशिश की है। लिहाज़ा अगर तुम से कोई कुछ मांगे तो हंस के दे दिया करो और शुक्र अदा करो कि अल्लाह ने तुम्हे देने वाला पैदा किया, मांगने वाला नहीं।

1982 में जब दिल्ली में एशियन गेम्स का इनएकाद हुआ था उस वक्त इन्तज़ामिया ने दिल्ली से भीख मांगने वाले तमाम लोगों को हटा दिया था। उन्हें अलग एक मुकाम पर वक़्ती तौर पर बसा दिया गया था उसकी वजह यह थी कि उस वक़्त एशियन गेम्स के सिलसिले में बेशुमार गैर–मुल्की मेहमान दिल्ली आ रहे थे। मांगने वाले मुल्की या गैर–मुल्की नहीं देखते और वह सबके सामने दस्तेसवाल दराज़ कर देते हैं। इससे मुल्क का वक़ार मजरूह होता है और दुन्या के सामने हिन्दुस्तान की छवि धूमिल हो सकती है। कामनवेल्थ गेम्स और इस तरह के आलमी सतह के स्पोर्ट्स और दीगर तक़रीबात/इवेंट्स के मौक़ों पर इन्तज़ामियां इस तरह के मुनासिब इक़दामात उठाती है। इन्तेज़ामियां के इस तरह के इक़दाम कारगर साबित होते हैं।

इसी तरह अगर देखा जाय तो भीख मांगती बुर्क़ापोश औरतें, दाढ़ी रखे और टोपी लगाये हुए भीख मांगते मर्दों का ये अमल मुस्लिम मुआशरे के लिए सुबकी का बाइस हो सकता है, लिहाज़ा हमें उनकी इस्लाह करने की ज़रूरत है। उनकी इस्लाह की कोशिश के लिए ये भी जानना ज़रूरी है कि वो भीख क्यों मांगते हैं। हद दर्जा गुर्बत भीख मांगने की वजह तो हो सकती है लेकिन सिर्फ गुर्बत इसकी वजह हो ऐसा ज़रूरी नहीं। इसकी बहुत सी वजूहात हो सकती हैं मिसाल के तौर परः–

1. ज़िन्दगी में कुछ करने की चाह का न होना।
2. पुर वक़ार ज़िन्दगी जीने की ख़्वाहिश और उसे जीने का हौसला न होना।
3. खुद्दारी न होना
4. मांग कर अपनी ज़रूरत पूरी कर लेने के आसान रास्ते को इख़्तियार करना।
5. ज़मीर का बेहिस होना।
6. तालीम बिलखुसूस मजहबी तालीम का न होना।
7. कमज़ोर मुआशी हालत।
8. मुआशरे की बेतवज्जवही।
9. मुन्सीफाना और मुनज्जम फलाही स्कीम की गैर मौजूदगी।
10. आमदनी का कोई ज़रिया न होना।

11. खराब सेहत, बीमारी, ज़ेहनी और जिस्मानी तौर पर मफलूज़ और माजूर होना।

12. सुस्ती और काहिली।

13. इज़्ज़त और ज़िल्लत की तफरीक से आरी होना।

14. मांगने वाला मांग कर अपनी ज़रूरत पूरी होने पर रुकता नहीं बल्की मांगने को अपना ज़रिये मुआश बना लेता है और मांग मांग कर ज़खीरा अन्दोजी भी करता है।

इसके अलावा और भी बहुत सी वजूहात हो सकती हैं। उनके मसायल को बेहतर ढंग से समझने और जानने के लिए उनकी एक सोशियो इकोनामिक स्टडी ***(Socio Economic Study)*** ज़रूरी है जिसके ज़रिए से उनके बारे में बेहतर मालूमात हो सकती है। यह जिम्मेदारी भरा और अहम काम हैं इसे कोई इदारा, अन्जुमन या मोहकमा जिम्मेदारी से पूरा कर सकता है। इससे हासिल मालूमात और नताएज़ की रोशनी में एक मुनज़्ज़म इस्लाही मुहिम चलाने की ज़रूरत है। तालीम एक ऐसा हथियार है जिसके ज़रिए किसी भी क़ौम की मुतअद्दिद मुश्किलात हल हो सकती है। तालीम के ज़रिए इसका हल पाएदार तो होगा लेकिन इसके लिए बड़ी मुद्दत दरकार है। लिहाज़ा हम तालीम को नज़रअंदाज तो नहीं कर सकते लेकिन जब तक तालीम की रोशनी उन तक पहुंचेगी तब तक देर न हो जाए, मजीद ये कि इस मसले को बेहतर ढंग से समझने, इसकी शिद्दत कम करने और ज़मीन हमवार करने के लिए हमें कोई हिकमतेअमली (मकैनिज़्म) तलाश करना होगा ताकि यह लोग भी बाइज़्ज़त ज़िन्दगी जीने के बारे में सोच सकें।

इनफिरादी तौर पर हममें से हर शख़्स मांगने वाले को जो कुछ देना चाहे वो ज़रूर दे लेकिन साथ ही उनके साथ नरमी से पेश आए और अच्छा सलूक करे और एक दो मिनट का वक़्त भी उन्हें दे उनसे बात करे और उन्हें समझाने की कोशिश करे, और बताये कि अल्लाह तआला ने तुमको हाथ पैर दिए हैं सेहत दी है लिहाज़ा मेहनत करो, काम करो और अपनी रोज़ी ख़ुद कमाओ। भीख मांग कर ज़िन्दगी गुज़ारना मुनासिब नहीं है। क्या तुम यह चाहते हो कि तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी भीख मांगती रहे। या फिर ऐसी ज़िन्दगी जीना चाहोगे जिसमें ज़िल्लत और रुसवाई न हो तुम्हारे अपने घर हों अपनी बुन्यादी ज़रूरतों को पूरी करने के लिए तुम्हारे पास वसाएल/साधन हों। इनफिरादी तौर पर किए जाने वाले इस काम में तरह तरह के रद्देअमल देखने और सुनने को मिलेंगे जिसके लिए समझदारी और कुव्वतेबरदाश्त बहुत अहम है। एक वक़्त आएगा कि इस तरह की गयी छोटी छोटी कोशिश समाज में पॉजिटिव असर ज़रूर डालेगी। बहुत मुमकिन है कि इस कोशिश से आज भीख मांगने वाला कल भीख देने वाला बन जाए।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः कुर्बानी का मुसलमानों के लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः क़ुर्बानी हर आ़क़िल बालिग़ मालदार मुसलमान पर वाजिब है, मालदार से मुराद है साहिबे निसाब होना यानि 612 ग्राम चाँदी या उसकी क़ीमत का मालिक होना, अगर 612 ग्राम चाँदी नहीं है लेकिन इस क़ीमत का दूसरा सामान जो ज़िन्दगी की ज़रूरतों से ज़ियादा हो जैसे ज़रूरत से जाइद कपड़े या बरतन जिन की क़ीमत 612 ग्राम चाँदी की क़ीमत के बराबर या ज़ियादा हो।

क़ुर्बानी ऐसे मालदार मुसलमान पर हनफ़ी आलिमों की तहक़ीक़ में वाजिब है लेकिन बाज़ दूसरे उलमा की तहक़ीक़ में सुन्नते मुअक्किदा है, सुन्नते मुअक्किदा वाजिब के क़रीब ही होती है।

प्रश्नः बाज़ लोग कहते हैं कि एक घर से एक क़ुर्बानी काफी है क्या यह सहीह है?

उत्तरः अगर घर में कई लोग रहते हैं और कई लोग साहिबे निसाब हैं यानी 612 ग्राम चाँदी की क़ीमत रखते हैं, औरतें 612 ग्राम चाँदी की क़ीमत के जेवरात रखती हैं मगर इन सब पर मिलकीयत घर मालिक की है तो सिर्फ घर मालिक की तरफ़ से एक क़ुर्बानी काफी होगी लेकिन घर के कई लोग अलग—अलग निसाब के मालिक हैं तो हर साहिबे निसाब पर कुर्बानी वाजिब होगी।

प्रश्नः किन किन जानवरों की कुर्बानी दुरूस्त है और उनकी उमरें क्या होनी चाहिए?

उत्तरः बकरी बकरा, भेंड़ (नर, मादा) और मेंढ़ा की उमरें एक साल या उससे ज़ियादा हों (मेंढ़ा हमारे यहां नहीं मिलता)। पड़िया, पड़वा, भैंस, भैंसा, गाय, बैल की उमरें दो साल या उससे ज़ियादा हों, लेकिन हमारे मुल्क में गाय के ज़बीहे पर क़ानूनन पाबन्दी है और गाय ज़ब्ह करने पर मुसलमानों को बड़ा नुक्सान उठाना पड़ता है इसलिए गाय की कुर्बानी हरगिज़ न करें, ऊँट (नर,मादा) की उम्र पाँच साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए लेकिन ऊँट हमारे यहां मुहय्या नहीं है, बस इन्हीं मज्कूरा जानवरों की कुर्बानी दुरुस्त है।

प्रश्नः क्या बूढ़े जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है?

उत्तरः बूढ़ी बकरी या बकरा, भेंड़ नर या मादा, भैंस या भैंसा अगर बहुत लागर न हो गये हों तो उनकी कुर्बानी दुरुस्त है।

प्रश्नः एक शख़्स अपने वफ़ात पाये हुए बाप की तरफ़ से क़ुर्बानी करता है तो क्या उसका गोश्त ख़ुद खा सकता है?

उत्तरः अगर कोई अपने वफ़ात पाये हुए किसी अज़ीज़ को सवाब पहुँचाने के लिए उसकी तरफ़ से क़ुर्बानी

करता है तो उसके गोश्त का हुक्म अपनी कुर्बानी की तरह है, ख़ुद खाये दूसरों को खिलाये। लेकिन अगर वफ़ात पाये हुए शख्स ने वसीयत की हो कि मेरे तर्के से कुर्बानी कर देना और उसके तर्के से क़ुर्बानी की गई हो तो उसका गोश्त सिर्फ मुहताज़ों का हक़ है, साहिबे निसाब न खायें।

प्रश्नः पड़वे की कुर्बानी में क्या अक़ीके़ का हिस्सा लिया जा सकता है?

उत्तरः हाँ बड़े जानवर की कुर्बानी में अक़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है, अगर लड़का हो तो दो हिस्से लें या एक दोनों जाइज़ है और अगर लड़की हो तो एक हिस्सा लें।

प्रश्नः बाज़ लोग कहते हैं कि लड़की के अक़ीक़े में छोटे जानवरों में एक बकरी या एक भेंड़ (मादा) ज़ब्ह करना चाहिए और लड़के के अक़ीक़े में दो बकरे या दो भेंड़ (नर) ज़ब्ह करना चाहिए क्या यह सहीह है?

उत्तरः लड़की के अक़ीक़े में छोटे जानवरों में एक साल उम्र या उससे ज़ियादा उम्र की बकरी या बकरा, भेंड़ी या भेंड़ा ज़ब्ह करना दुरुस्त है और लड़के के अक़ीक़े में यही जानवर (नर या मादा) चाहे दो ज़ब्ह करें चाहे एक।

प्रश्नः आक़िल बालिग़ से क्या मुराद है?

उत्तरः आक़िल से मुराद है पागल न हो, बालिग से मुराद है जवान हो गया यानी लड़का हो तो उसे एहतिलाम स्वप्न दोष) या इन्ज़ाल (वीर्य पात) होने लगे मगर बारह साल से पहले ऐसा नहीं हो सकता और अगर लड़की हो तो उसे हैज़ (मासिक धर्म) आने लगे लेकिन नौ साल से पहले लड़की को हैज़ नहीं आ सकता, अगर लड़की या लड़के की यह पहचानें जाहिर न हों और वह पन्द्रह साल के हो जायें तो वह बालिग समझे जायेंगे, आक़िल बालिग मुसलमान शरीअत का मुकल्लफ हो जाता है यानी शरीअत की पाबन्दी उसके लिए ज़रूरी हो जाती है।

प्रश्नः क़ुर्बानी की खाल का क्या मसरफ़ है?

उत्तरः क़ुर्बानी की खाल अगर चाहें तो सुखा कर नमाज़ पढ़ने के लिए मुसल्ला बना लें या झोले वगैरा बना लें लेकिन अगर खाल बेची जाये तो उसकी क़ीमत मुहताजों का हक़ है उसकी कीमत से मस्जिद की तामीर या मदरसे की इमारत की तामीर दुरुस्त नहीं इसी तरह उस क़ीमत से मुदर्रिसीन की तनख्वाह देना भी दुरुस्त नहीं ऐसे मदरसे जहां गरीब तलबा को मुफ़्त खाना दिया जाता है वहां उस मसरफ़ के लिए क़ुर्बानी की खाल का उसकी कीमत देना बेहतर है।

प्रश्नः क्या मालदार मुसलमान सफ़र पर हो तो उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं है?

उत्तरः अगर आक़िल बालिग़ साहिबे निसाब मुसलमान दस ग्यारह बारह जिलहिज्ज को शरई सफ़र पर है तो उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं, अगर वह बारह जिलहिज्ज को गुरूब से पहले सफ़र से वापस आ जाये तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जायेगी इसी तरत अगर उसने सफ़र में कहीं 15 दिन या उससे

ज़ियादा ठहरने का इरादा कर लिया और उन दिनों में कुर्बानी के दिन आ गये तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जायेगी।

प्रश्न: जो लोग बाहर मुल्कों में काम करते हैं और क़ुर्बानी के दिनों में वहीं रहते हैं अगर उनके घर वाले अपने मुल्क में उनकी तरफ़ से क़ुर्बानी कर दें तो कुर्बानी सही होगी या नहीं?

उत्तर: जो लोग कुर्बानी के दिनों में अपने घर से बाहर हों और उन पर कुर्बान वाजिब हो तो उनको चाहिए कि अपने घरवालों को फोन या और किसी तरह कहला दें कि मेरी तरफ़ से कुर्बानी कर दें अगर उनके कहे बगैर क़ुर्बानी कर दी तो वाजिब अदा न होगा। और उनके कहे बगैर किसी बड़े जानवर में हिस्सा लेना बाज़ मुहक्किक उलमा के नज़दीक दुरुस्त नहीं है इसलिए उनके कहे बगैर बड़े जानवर में क़ुर्बानी का हिस्सा हर गिज न लें या फिर ऐसी सूरत पेश आये तो किसी अच्छे आलिम से मालूमात करके उस पर अमल करें।

प्रश्न: क़ुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिमों को देना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: क़ुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिमों को देना दुरुस्त है लेकिन अपने मुस्लिम भाईयों को महरूम करके गैर मुस्लिमों की खुशनूदी हासिल करने के लिए उनको गोश्त भेजना ठीक नहीं है लेकिन अगर यह बात न हो तो वतनी भाइयों से मेल महब्बत बढ़ाने के लिए उनको क़ुर्बानी का गोश्त भेजना अच्छी बात है।

❖❖❖

कर्ज़दार......

शफ़ीक़ बल्खी ने सोचा कि ये भी खूब आया। अब तो इमाम साहब तकाज़ा करेंगे, कर्ज़ लेकर छुपने वाले को डाँटेंगे, उसकी जमकर ख़ैरियत लेंगे, मगर ये क्या? यहां तो मामाला उल्टा था।

इमाम साहब उस कर्ज़दार से कह रहे थे कि भाई! बुरा हो उस कर्ज़ के बोझ का, जिसके कारण तुम्हें मुझे देख कर शर्मिन्दगी हुई, तुम्हें इस कारण मुंह न छुपाना था। और भाई! जो रकम मैंने तुम्हें दी थी, वह कर्ज़ न था बल्कि उपहार था। भाई! मुझे माफ करना, शर्मिन्दगी की जो तकलीफ तुम्हें मेरी वजह से पहुंची है, उसके बारे में जब सोचता हूं तो मेरी आत्मा मुझ पर धिक्कार करती है।

प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहना है कि किसी को कर्ज़ दो तो उसके साथ नर्मी का बर्ताव करो, यदि हो सके तो उसका कर्ज़ माफ़ कर दो।

अब आइये इस दौर में कि यदि आज कोई कसी को कर्ज़ देता है तो मानो उससे गुलामी की उम्मीद पाल लेता है, लेकिन इन्सानियत का तक़ाज़ा यही है कि जब किसी को कर्ज़ दिया जाए तो तक़ाज़ा करने में नर्मी बरती जाए यदि हो सके तो माफ कर दिया जाए यही इस्लाम की तालीम है।

❖❖❖

स्वतंत्रता दिवस —इदारा

दिवस स्वतंत्रता आया है, ख़ुशियां ख़ूब मनाएंगे
राष्ट्र ध्वज फहराएंगे, राष्ट्र गीत हम गाएंगे
ले के तिरंगा हाथों में, पंक्ति बना कर निकलेंगे
जय हो भारत महान की जय जय कार मचाएंगे
नमन करेंगे ईश्वर को, उसी ने यह आज़ादी दी
ईश्वर के आदेशों को घर-घर हम पहुंचाएंगे
धन्यवाद उन वीरों को, जिनके ही प्रयासों से
देश हमारा स्वतंत्र हुआ, उनकी याद मनाएंगे
हर कोई यां समृद्ध रहे, हर कोई उद्योगी हो
निर्धनता यां रहे नहीं, ऐसा जतन जुटाएंगे
हर कोई यां शिक्षित हो, कला भी कोई सीखे वह
जड़ता और निर्धनता को, मिल कर दूर भगाएंगे
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, रहें यहां पर जैसे भाई
उनमें मेल बढ़ाएंगे, उनमें प्रेम बढ़ाएंगे

धर्म पे अपने चलें सभी, धर्म न छोड़े कोई भी
धर्म लड़ाई होए ना यां, सबको यही सिखाएंगे
छूत छात यां रहे नहीं, ऊँच नीच यां रहे नहीं
अंधविश्वास जो फैला है, उसको दूर भगाएंगे
सब का साथ और सबका विकास, मन्त्र ये क्या ही अच्छा है
प्रधानमंत्री का मंत्र है यह, सबको हम बतलाएंगे
हिन्द हमारा बहुत बड़ा है, सवा अरब आबादी है
प्रधानमंत्री का संकल्प है यह, सबको सुखी बनाएंगे
ईश्वर उनकी मदद करे, उनका इरादा पूरा हो
हम भी अपने ईश्वर से दुआ में ये दोहराएंगे
अपना भी संकल्प है यह, जो भूलेंगे निर्माता को
प्रेम भाव से मिलेंगे उनसे, उसकी याद दिलाएंगे
भारत प्यारा जिन्दाबाद, हिन्द हमारा जिन्दाबाद
देश हमारा जिन्दाबाद नारा खूब लगाएंगे

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत

—अफ़ीफ़ा सिद्दीक़ा (आलिमा बी०ए०

अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का देहान्त 12 रबी उल अव्वल सन् 11 हिजरी को हुआ, तो पहले खलीफ़ा हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का ज़माना आया, उनका देहान्त 21 जुमादल उख़रा सन् 13 हिजरी को हुआ उनके बाद दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 का ज़माना आया उनका शासन काल 22 जुमादल उख़रा सन् 13 हिजरी से पहली मुहर्रम सन् 24 हिजरी तक रहा, 27 ज़िल्हिज्ज सन् 23 हिजरी की सुब्ह को नमाज़ पढ़ा रहे थे कि मरदूद अबू लूलू सुब्ह के अन्धेरे में मेहराब के कोने में छुपा हुआ था उसने हज़रत उमर रज़ि0 को विषैली कटार से घायल कर दिया वह भागा भागने में सख़्त रुकावट थी इसलिए उसने कई नमाज़ियों को मारते हुए बाहर निकलने की कोशिश की उसने देखा कि वह भाग न सकेगा, पकड़ा जाएगा तो उसने ख़ुद को विषैली कटार से मार लिया। इतनी बड़ी ख़ूनी घटना घटी परन्तु किसी ने नमाज़ न तोड़ी, हज़रत उमर रज़ि0 को भारी घाव लगा था वह गिर गए हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 ने बढ़ कर नमाज़ पढ़ाई, यह उत्तम ईमान वालों का उत्तम आदर्श था अन्यथा अब इस्लामिक विधान के प्रकाश में यही आदेश दिया जाएगा कि नमाज़ की पक्तियों में कोई ऐसा दोषी घुस आए तो कुछ लोग नमाज़ तोड़ कर उसे पकड़ लें और नमाज़ फिर से पढ़ लें तथा उस दोषी को भयोत्पादक तथा कठोरतम दण्ड का प्रावधान किया जाए।

हज़रत उमर रज़ि0 को उठा कर लाया गया, 27 जिलहिज्ज सन् 23 को विषैला घाव लगा था इलाज से कोई लाभ न हुआ और पहली मोहर्रम सन् 24 हिजरी को आपका देहान्त हो गया और आप शहीद हो गये। हम सब अल्लाह ही के हैं और उसी के पास लौट कर जाना है।

अब तीसरे खलीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि0 का ज़माना आया अब उनकी शहादत का वर्णन पढ़ये हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत की घटना का वर्णन बहुत विस्तार चाहता है यहां संक्षेप में उल्लेख किया जाता है—

आपकी खिलाफ़त के आठ वर्ष बहुत अच्छे बीते, आप के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शुभ अंगूठी थी एक दिन वह कुंए में गिर गयी और फिर मिल न सकी बस उसी समय से आप का विरोध आरम्भ हुआ आप पर झूठे आरोप लगाए जाने लगे इस काम में अब्दुल्लाह बिन सबा आगे आगे था उसने नये ईमान लाने वालों को बहका कर अपने साथ कर लिया उसके इन प्रयासों से कई नगरों विशेष कर मिस्र के लोग विद्रोह पर तैयार हो गये और एक बड़ा समूह विद्रोहियों का मदीना पहुंच

गया मदीने के अहम लोग हज पर जा चुके थे विद्रोहियों ने आप का घर घेर लिया और घर में खाना पानी पहुंचने पर रोक लगा दी यह घेराव बाज़ रिवायतों में है कि चार हफ़्तों तक और बाज़ रिवायतों में है कि चालीस दिनों तक रहा विद्रोही आप से मांग कर रहे थे कि खिलाफ़त छोड़ दीजिए लेकिन अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप से कहा था कि अल्लाह तआ़ला तुम को एक कुर्ता पहनायेगा लोग उसे उतारना चाहेंगे मगर तुम उतारना नहीं, कुर्ता से यहां तात्पर्य ख़िलाफ़त है इसलिए आप ने ख़िलाफ़त छोड़ने से इन्कार कर दिया, बाज़ सहाबा ने ख़लीफ़ा से इजाज़त मांगी कि वह विद्रोहियों से लड़ें परन्तु हज़रत उस्मान ने कहा हम कलिमा पढ़ने वालों से न लड़ेंगे न लड़ने की इजाज़त देंगे। इस वक़्त हमारी मदद यही है कि हमारे मददगार अपनी तलवारें अपनी मियान में रखें, इन हालाता में बाज़ सहाबा ने अपने जवान लड़कों को हज़रत उसमान रज़ि0 के दरवाज़े पर पहरा देने के लिए नियुक्त किया, हज़रत अली रज़ि0 के दोनों बेटे हज़रत हसन और हुसैन भी दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे। हज़रत तलहा के बेटे मुहम्मद भी पहरेदारों में थे और कई सहाबी ज़ादे और बाज़ सहाबी भी पहरा दे रहे थे। विद्रोही अन्दर खाना पानी नहीं जाने दे रहे थे। हज़रत अली रज़ि0 ने पानी भेजा वह बड़ी कठिनाइयों के पश्चात अन्दर जा सका, मोमिनों की माँ उम्मे हबीबा रज़ि0 ने कुछ खाना पानी अन्दर पहुंचाने का प्रयास किया मगर विद्रोहियों ने उनका भी सम्मान न किया और खाना पानी अन्दर न जाने दिया, बड़ी बुरी दशा थी पहरादार विद्रोहियों को अन्दर न जाने देते थे और विद्रोही खाना पानी अन्दर न ले जाने देते थे। एक दिन विद्रोही तीर चलाने लगे, एक तीर हज़रत उसमान के अ़ज़ीज़ मरवान के लगा, एक तीर हज़रत हसन को लगा वह ख़ून से नहा गए, एक तीर मुहम्मद बिन तलहा के लगा, एक तीर हज़रत अली के ग़ुलाम क़ंबर के लगा और कई लोग घायल हुए घर के घेरे को चार हफ़्तों से अधिक हो चुके थे इन हालात में हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ने हज़रत उसमान रज़ि0 के सामने तीन बातें रखीं।

1. आप तलवार ले कर निकलये मदीने के अन्सार और मुहाजिरीन में से जो हैं सब आपकी ओर से विद्रोहियों से लड़ने को तैयार हैं।

2. या आप घर के पीछे से निकल कर मक्का मुकर्रमा चले जाइये वहां आप सुरक्षित रहेंगे।

3. या आप शाम हज़रत मुआविया रज़ि0 के पास चले जाइये!

आपने उत्तर दिया पहली बात इसलिए स्वीकार नहीं कि मैं अपने हाथों से या अपने आदेशों से किसी कलिमा पढ़ने वाले का ख़ून नहीं बहा सकता। दूसरी बात इसलिए स्वीकार नहीं कि

यह विद्रोही मक्के में भी मेरा पीछा कर सकते हैं और वहां खून बहाना ह्रमे मक्की का अपमान करना है, जो मुझे स्वीकार नहीं। तीसरी बात इस लिए स्वीकार नहीं कि मैं प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नगर मदीना छोड़ना नहीं चाहता।

हालात बहुत ख़राब थे जुमे का दिन था हज़रत उसमान रज़ि0 ने स्वप्न में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा उनके साथ हज़रत अबु बक्र और हज़रत उमर रज़ि0 भी थे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसमान! हम लोग तुम्हारे इफ़तार का इन्तिज़ार कर रहे हैं, आँख खुल गयी समझ गये कि आज फ़ैसला होना है। शहादत की शुभ सूचना तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले ही दे रखी थी अब यक़ीन हो गया कि आज वह दिन आ गया, बीबी को बताया कि आज मेरी शहादत का दिन है, बीबी ने कहा ऐसा कैसे हो सकता है, जवाब दिया मुझे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख्वाब में इशारा दे दिया है, उधर विद्रोहियों में मुहम्मद बिन अबी बक्र ने अपने बाग़ी साथियों से कहा कि घेरे का समय लम्बा हो चुका है ऐसा न हो कि हाशिम का परिवार और दूसरे सहाबा सामने आजायें अतः दो तीन आदमी हमारे साथ चलें अतएव तीन या चार विद्रोहियों को ले कर वह घर के पीछे गया इसकी ख़बर न तो पहरेदारों को हुई न बड़े घर के अन्दर एक तरफ़ मौजूद 700 आदमियों को हुई वह विद्रोही घर के पीछे से छत पर चढ़ गये और फिर हज़रत उसमान रज़ि0 के पास पहुंच गये हज़रत रोज़े से थे, तिलावत कर रहे थे उनकी बीवी हज़रत नाइला पास में थीं, मुहम्मद बिन अबी बक्र ने हज़रत उसमान रज़ि0 की दाढ़ी पकड़ ली हज़रत ने कहा बेटे तुम्हारे पिता यह देखते तो उनको दुख होता वह दाढ़ी छोड़ कर पीछे हट गया मगर उसके साथियों ने हज़रत पर तलवार से वार कर दिया हज़रत नाइला ने हाथ से रोकना चाहा तो उनकी उंगली कट कर अलग हो गई हज़रत उसमान रज़ि0 शहीद हो गए। (इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन) यह जिलहिज्जा की 18 तारीख़ थी। विद्रोही शहीद करके भाग गये। शहादत के वक़्त कुर्आन खुला हुआ था, सुरेः बकरः की आयत 137 की जिन शब्दों पर खून के छीटें पड़ें उनका अर्थ है ''सो शीघ्र ही तुम्हारी ओर से अल्लाह उनसे निमट लेगा, वह बड़ा ही सुनने वाला और बड़ा ही जानने वाला है''।

हज़रत नाइला छत पर चढ़ कर चिल्लाईं कि लोगो खलीफ़ा शहीद हो गये, लोग घर में दाखिल हुए तो देखा हज़रत उसमान रज़ि0 खून में लतपत पड़े हैं। हालात इतने खराब थे और विद्रोहियों (बाग़ियों) का इतना ज़ोर था कि कोई उनसे भिड़ने का साहस नहीं कर सकता था, विद्रोही हज़रत अली रज़ि0 के पास पहुंचे और कहा हम आपको

ख़लीफ़ा बनाते हैं, आप हमसे बैअ़त लीजिए, हज़रत ने फरमाया कि मुझे शर्म आती है कि उसमान बे गोर व कफ़न पड़े हैं और मैं बैअ़त लूं, फिर यह तुम्हारा काम नहीं है अहले बद्र जिसको ख़लीफ़ा बनाएंगे वह ख़लीफ़ा होगा, विद्रोही बद्री सहाबियों से मिलने लगे और उनको तैयार करने लगे। हज़रत उसमान रज़ि0 तीन रोज़ तक बे गोरो कफ़न पड़े रहे, 20 ज़िलहिज्ज की रात को कुछ नौजवानों ने उनकी लाश को निकाला और बाहर ले गए, जन्नतुल बक़ीअ़ के पास ''हश्शे कौकब'' नामी खजूर के बाग़ में नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर दफ़्न कर दिया और क़ब्र का निशान मिटा दिया इस काम में 17 जवान शरीक़ थे मगर तारीख़ में उनके नाम नहीं मिलते 21 जिलहिज्जा को बद्री सहाबियों के इसरार पर हज़रत अली रज़ि0 ने ख़िलाफ़त की बैअ़त की और उनकी ख़िलाफ़त का दौर शुरु हुआ, हज़रत उसमान रज़िअल्लाहु अन्हु जैसी मज़लूमाना शहादत की मिसाल तारीख़ में नहीं मिलती।

अब्दुल्लाह बिन सबा की साज़िश से यह विद्रोह आरम्भ हुआ उन लोगों ने तय कर लिया था कि या तो खलीफ़ा को माज़ूल (पदच्युत) कर देंगे या क़त्ल कर देंगे इसके लिए उन्होंने बीसों आरोप गढ़े उन सब आरोपों का खण्डन हज़रत शाह वलीयुल्लाह रह0 ने इज़ालतुल खिफ़ा में किया है और हज़रत शाह मुईनुद्दीन नदवी ने अपनी तारीख़े इस्लाम के पहले भाग में बहुत ही उचित उत्तर दिये हैं। हम यहां मुहम्मद बिन अबी बक्र के विषय में कुछ लिखना चाहते हैं–

मिस्र का गवर्नर ज़ुल्म कर रहा था उसकी शिकायत हज़रत उसमान रज़ि0 से की गई हज़रत ने उस गवर्नर को तमबीही ख़त लिखा उसने अपनी इस्लाह के बजाय शिकायत करने वालों को मारा पीटा यहां तक कि उन में का एक आदमी मर गया तो बहुत से लोग हज़रत उसमान के पास शिकायत ले कर आये, हज़रत उसमान ने उस गवर्नर को माज़ूल कर दिया और मुहम्मद बिन अबी बक्र को मिस्र की गवर्नरी का परवाना दे कर भेजा वह एक जमाअ़त के साथ मिस्र जा रहे थे, रास्ते में उनको एक आदमी ऊँट पर सवार जाता दिखा तो उसको पकड़ कर पूछा तुम कौन हो कहां जा रहे हो? उसने कहा मैं ख़लीफ़ा का ग़ुलाम हूं, मिस्र के गवर्नर के पास जा रहा हूं लोगों ने कहा मिस्र के गवर्नर तो हमारे साथ हैं, उसकी तलाशी ली गई तो उसके पास एक खत निकला, ख़त खोल कर पढ़ा गया तो उसमें लिखा था कि तुम बदस्तूर गवर्नर हो और मुहम्मद बिन अबी बक्र और उनके साथियों को किसी बहाने से क़त्ल कर दो अब यह देख कर मुहम्मद बिन अबी बक्र भी ख़लीफ़ा के दुश्मन हो गए अगरचे यह साबित न हो सका कि वह ख़त ख़लीफ़ा ने लिखा था। हज़रत उसमान रज़ि0 ने

क़सम खा कर कहा था कि मैंने यह ख़त नहीं लिखा है बहुत से आलिमों का ख़्याल है कि वह ख़त विद्रोहियों ने ही किसी तरह लिख कर उस ग़ुलाम को तैयार किया था लेकिन अधिकांश आलिमों का मानना है कि यह ग़लती हज़रत उसमान के क़रीबी अज़ीज़ मरवान की थी हज़रत उसमान रज़ि0 को भी शायद ऐसा गुमान था और बाद में वह उसको अलग कर देते मगर क़रीबी अज़ीज़ होने के सबब उसका क़त्ल नहीं चाहते थे।

मुहम्मद बिन अबी बक्र की मुख़ालफत का यही सबब था वरना वह पहले ख़लीफ़ा के मुख़ालिफ़ न थे।

इस लेख की तमाम जानकारियां विश्वस्नीय पुस्तकों से ली गई हैं।

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

प्यारे नबी की ....

औरत अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखती हो उसको जायज़ नहीं कि वह किसी मय्यत पर तीन दिन से ज़ियादा शोक करे, अलावा शौहर के उसके लिए चार महीने दस दिन तक सोग करना चाहिए।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

एक मुसलमान भाई के सौदे पर सौदा करने और उसके पैगाम पर पैगाम देने की मुमानियतः—

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया शहर का रहने वाला बाहरी आने वाले से खरीद कर सौदा न बेचे अगरचि उसका सगा भाई हो।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सौदे को आगे बढ़ कर न खरीदो, उसको बाज़ार में आने दो।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम आगे बढ़ कर काफिले से गल्ला न खरीदो (अर्थात यह कि आगे न बढ़ कर जाओ और यह न कहो कि यहां का यह भाव है कि उनसे सस्ती चीज़ें खरीद लो) और शहरी आदमी देहाती का सौदा न बेचे इब्ने अब्बास के शागिर्द ताऊस ने कहा कि इसका क्या अर्थ है? कहा कि दलाल न बने।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया शहरी देहाती के लिए न बेचे और धोका देने के लिए सौदे का दाम न बढ़ाओ, और अपने मुसलमान भाई के लिए सौदे की खरीद फरोख़्त के समय अपना सौदा पेश न करो और अपने भाई के पैग़ामे निकाह पर अपना पैगाम न दो, औरत अपने शौहर से अपनी मुसलमान बहन के तलाक देने की ख्वाहिश न करे कि उसका हिस्सा मुझे मिल जायेगा।

(बुखारी—मुस्लिम)

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

दीन से अनभिज्ञता अथवा उसके बाज़ आदेशों की उपेक्षा?

(दीन से ना वाक़िफ़ीयत या उसके बाज़ अहकाम से बेएअ़तिनाई ?)

—एडीटर

एक प्रिय दीनदार मित्र ने अपने बेटे के निकाह में सम्मिलित होने हेतु यह कहते हुए आमंत्रित किया कि न नाच न बाजा, न रिकार्डिंग न और कोई हुल्लड़ आप आएंगे अवश्य। मैंने हां भर ली और निर्धारित समय पर पहुंच गया, बताया गया कि कुछ घरों के पश्चात दुल्हन के द्वारे चलना है वहीं निकाह होगा। यह सत्य है कि हम जैसे दस पांच लोग पलंगों पर बैठे थे, न गानों की आवाज़ थी न ढोल धम्मक। परन्तु अचानक पर्दे के बिना कसे वस्त्रों में कैमरे लिए हुए कुछ कुमारियां आ धमकीं, बताया गया कि यह दुल्हन की सहेलियां हैं जिन से दूल्हा जी की भी मित्राई है। घर के भीतर से भी कुछ युवतियां प्रकट हुईं दूल्हे मियां भी न्योजित प्रोग्राम के अंतर्गत आ पधारे और वह फोटोग्राफी चली कि शैतान भी लज्जित हो। इस दृष्य को देखने में लोग इतने लीन हुए कि मेरे लुप्त होने को जान भी न सके।

मैं एक मस्जिद में इमामत करता था मुहल्ले के एक सज्जन आए और कहा कि कल मेरे बेटे का निकाह है आपको बारात चलना है और निकाह आप ही को पढ़ाना है। मैंने पूछा नाच बाजा तो नहीं है? बोले, नहीं नहीं, यह सब कुछ नहीं। मुझे गाड़ी से ले गये वहां पहुंच कर विचित्र दृष्य दिखा एक सुन्दर लौन्डा स्त्रियों के वस्त्र में मेकप किये हुए नाचने को तत्पर, ढोलक, बेन और लेजिम वाले राग छेड़ने को उत्सुक, कि हमारे आतिथ्य कर्ता ने डपट कर कहा ख़बर दार जो बाजा बजा, दुल्हन वालों की ओर से भी कोई साहब डहुंके, ख़बरदार जो बाजा बजा, जैसे मिली भगत हो। जो भी हो बाजा नहीं बजा मैंने निकाह पढ़ाया, दुआ़ ख़त्म होते ही ढोल की थाप सुनाई पड़ी और लौन्डे के मटकने थिरकने के दृष्य में लोग ऐसे संलग्न हुए कि वहां से भी मेरे विलोप होने को न जान सके, रात्रि के दस बजे का समय था, मुझे दूसरे दिन बताया गया कि खाने के समय मुझे बहुत ढून्ढा गया, परन्तु मैं तो मुह़ल्ला ही छोड़ चुका था। दूसरे दिन आमंत्रित करने वाले ने मस्जिद में भेंट कर के अपवाद किया मैंने भी जैसे बना निकाह की इस्लामी विधि समझाई और

नाच बाजा की बुराइयां स्पष्ट कीं।

एक सम्बन्धी ने कहा भय्या कल पोती का निकाह है, 11 बजे कुछ लोगों के साथ लड़का आएगा कोई शोर हुल्लड़ नहीं है निकाह आपको पढ़ाना है। मैंने कहा बहुत अच्छा। मैं दूसरे दिन पौने ग्यारह बजे उनके द्वारे पहुंच गया, 12 बजे, धम्मक धम्मक, के साथ बारात आती दिखी, घर के लोग कुर्सी तख़्त ठीक ठाक करने में लग गये मैं चुपके से खिसक लिया, पता चला कि बारात के साथ कोई क़ाज़ी जी थे उन्हीं ने निकाह पढ़ाया।

एक अ़ज़ीज़ की लड़की की मंगनी में लगभग सौ लोग आए, नाच बाजा साथ था मुझे भी बुलाया गया था, यह सब देख कर मैं घर बैठा रहा। मूल्यवान भोज का प्रबन्धन था खा पी कर लोग बैठे निकाह् तिथि निश्चित हुई, अर्थात दिन धरे गये मान सम्मान के साथ कई हज़ार रूपये दे कर मंग्नीहारों को बिदा किया गया। मैंने अपने अज़ीज़ से पूछा आख़िर यह सब क्यों? कहने लगे यह सब न करेंगे तो दूसरी लड़कियों की कहीं से बात भी तो न आएगी।

मेरे एक मिलने वाले ने अपनी बहन की शादी में इतना जहेज़ दिया कि दूल्हा के घर वालों ने जहेज़ का सामान रखने के लिए पड़ोसी से कमरा मांगा। मैंने कहा ऐसा क्यों? कहने लगे क्या मैं अपनी बेटियों को घसयारों से व्याहूंगा? ऐसा नहीं करूंगा तो मेरी बेटियों की बात खाते पीते घरों से आने से रही। चुनांचि ऐसा ही हुआ उनकी बेटियों की सगाई कमासुक लड़कों से हुई और लाखों का जहेज़ दिया गया मैंने कहा ठीक है तुम्हारे पास पैसा है तुमने अपनी बेटियों की समस्याओं का समाधान कर लिया परन्तु वह शिष्ट लोग जिनके पास पैसा नहीं है जब कि उन्होंने अपनी बेटियों की शिक्षा दीक्षा में समय लगाया है उनका क्या होगा एवं मैंने कहा अगर निकाह् को एक इबादत (उपासना) समझते हुए शरीअ़त के अनुसार उसका निष्पादन किया जाए तो खुद को सवाब मिले तथा दूसरों के सामने ''दीन आसान है'' का सन्देश तथा उदाहरण आए। वास्तव में यह मंगनी, लगन, तिलक, तेल, मैन, बारात, चौथी इन में से किसी का भी इस्लाम से कोई समबन्ध नहीं है। यह भारी दहेज़ उसकी मांग या बिन मांगे इस का चलन। इन प्रथाओं के कारणों में सबसे महत्वपूर्ण कारण दीन की शिक्षा न होना या दीन की शिक्षा के साथ आख़िरत का विश्वास निर्बल होना है, दुन्या का आनन्द, तथा दुन्या का लाभ छाया हुआ होना है।

कुछ धनवानों को दिखावा प्रिय होना भी एक कारण है। कुछ लोग चाहते हैं कि उनकी बेटी अच्छे कमासुक लड़के से व्याही जाए, लड़का ग्रजुएट हो, पोस्ट ग्रेजुएट हो, इंजीनियर हो, डॉक्टर हो, व्यापारी हो, उद्योग वाला हो ताकि हमारी बेटी सुखी रहे। ऐसे लड़कों को पाने के लिए वह जहेज का घूस प्रस्तुत करते हैं तथा ऐसे लड़के और लड़के वाले भी जहेज़ की मांग करते हैं इस प्रकार समाज जो बिगड़ा तो सुधरने की कोई डगर नहीं दिख रही है। क़ानून ने आंशिक प्रभाव डाला परन्तु समाज का बहुसंख्यक इन्हीं विकारों में लत पत है यहां तक कि क़ानून बनाने वाले मंत्री, एम0एल0ए0, दारोगा तथा न्यायधीष भी अपनी बेटियों की शादी में यह सब करते दिखते हैं।

समाज ऐसा बिगड़ा हुआ है कि इक्का दुक्का जब कोई सीधे सादे शादी विवाह, निकाह का आदर्श प्रस्तुत करता है तो उस पर गर्व करने के स्थान, और लज्जित होता है। कई दीनदारों को देखा गया कि उन्होंने सादगी से निकाह रुख्सती को तो अपनाया, वलीमा भी साधारण रखा परन्तु वह जल्द ही दूसरों के भव्य भोज तथा भारी जहेज को ललचा पड़े कुछ ने तो सम्बन्ध ही ख़राब कर लिये।

एक मित्र ने मांग की कि इस्लामी विवाह पर कोई निबन्ध लिखें हो सकता है कुछ सुधार हो। वास्तव में समस्या दीन से अनभिज्ञता की नहीं अपितु उसके बाज़ आदेशों की उपेक्षा की है, लेख तो केवल ज्ञान देगा, ज्ञान को व्यवहार में लाना ज्ञानियों का कार्य है। दीनदारों को चाहिए कि समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए समितियां बनाएं उन के द्वारा धार्मिक विश्वास को सुदृढ़ बनाएं और इस्लामिक विश्वासों तथा आदेशों द्वारा समाज सुधार की चेष्ठा करें। इनशाअल्लाह कुछ सुधार अवश्य होगा। प्रयास करना अपना काम है निःस्वार्थ प्रयास करने वाला विफल नहीं होता फिर भी सत्यमार्ग (हिदायत) प्रदान करना अल्लाह के अधिकार में है अतः अल्लाह तआ़ला से दुआ में कोताही न करना चाहिए। अल्लाह तआला सब मुसलमानों को अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए मार्ग पर चलने का सामर्थ दे आमीन।

मेरा अनुभव है कि जिस क्षेत्र या गांव के लोगों ने तबलीग़ी जमाअ़त से सम्बन्ध जोड़ा वहां उक्त बुराइयां नहीं पाई जाती हैं अतः ऐसे इलाक़ों में तबलीग़ी जमाअ़त को काम करना चाहिए और वहां के लोगों को तबलीग़ी जमाअ़त का स्वागत करना चाहिए।

पाँचवें ख़ली-फ़ए-राशिद हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु

—मौलाना गुलाम रसूल महर

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

इब्तिदाई हालातः–

हज़रत इमाम हसन रज़ि0 हिज़रत के तीसरे बरस रमज़ान के महीने में पैदा हुए, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ''हसन'' नाम रखा तक़रीबन आठ बरस के थे जब रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुन्या से तशरीफ ले गये, हज़रत अबू बक्र रज़ि0, हज़रत उमर रज़ि0 और हज़रत उस्मान रज़ि0 की ख़िलाफ़त का जमाना इतमीनान से गुज़रा, सब रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस प्यारे को सर आँखों पर बिठाते थे, हज़रत उस्मान रज़ि0 की हिफ़ाज़त करते हुए ज़ख़्मी भी हुए और सिफ्फ़ीन की जंगों में भी शरीक़ थे।

बैअ़ते ख़िलाफ़त– (आख़िर रमज़ान सन् 40 हिज्री):–

हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद लोगों ने हज़रत हसन रज़ि0 की बैअ़त की, अमीरे मुआ़विया रज़ि0 से लड़ाई जारी थी और हज़रत हसन रज़ि0 सोच रहे थे कि इसे क्यों कर बन्द किया जाये, वह जानते थे कि हज़रत अली रज़ि0 ने लड़ाइयां हक़ की खातिर और उम्मत की भलाई की गरज़ से शुरुअ़ की थीं, मगर आहिस्ता आहिस्ता लोगों में गुरोह बन्दी का जज़्बा पैदा हो गया था और उम्मत की कूवत बाहमी रज़्म व पैकार (लड़ाइयों) में बरबाद हो रही थी, अमीरे मुआ़विया रज़ि0 के मुक़ाबले के लिए तो निकले लेकिन अपने दिल में पुख़्ता फैसला कर चुके थे कि मौक़ा पाते ही खुद खिलाफत से अलग हो जायेंगे और आये दिन की खूँनी लड़ाइयों को ख़त्म कर देंगे।

एक तक़रीरः–

एक मौक़े पर इमाम हसन रज़ि0 ने फरमाया ''लोगो! मैं किसी मुसलमान की जानिब से अपने दिल में कीना नहीं रखता, तुम को उसी नज़र से देखता हूं जिस नज़र से अपनी ज़ात को देखता हूं, मैं तुम लोगों के सामने एक राय पेश करता हूं, उम्मीद है उसे रद नहीं करोगे, जिस इत्तिहाद और यक जिहती को तुम नापसन्द करते हो, वह उस तफरिक़ा और इख़्तिलाफ से बदरजहा बेहतर है जिसे तुम क़ाइम रखना चाहते हो''।

दस्त बरदारी– (अलग होना– रबीउल–अव्वल सन् 41 हिज्री):–

बहर हाल इमाम हसन रज़ि0 ने सुल्ह की मुनासिब शरतें तै करालीं, बल्कि कहा जाता है कि अमीर मुआविया

रज़ि0 ने एक सादे काग़ज़ पर दस्तखत करके हज़रत इमाम हसन रज़ि0 के इख्तियार में दे दिया था कि जो शरतें चाहें लिख लें, फिर अमीर ने ज़बानी भी इन शरतों की तस्दीक़ कर दी।

इसके बाद बर सरे आम (सबके सामने) खिलाफ़त से दस्त बरदारी (अलग होने) का एलान कर दिया, इस मौक़े पर जो तक़रीर की, उसमें फरमाया ''अम्र खिलाफत हमारे और मुआविया के दरमियान झगड़े का सबब बना हुआ है, दो ही सूरतें हो सकती हैं, या हम इसके हक़दार हैं या मुआविया रज़ि0 का हक़ है, मैं दोनों सूरतों में उसे छोड़ता हूँ''।

गरज़ सिर्फ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में फूट बाक़ी न रहे, और लोग आपस की लड़ाई और खूँरेज़ी (खून बहाने) से बचे रहें।

इस तरह वह पेशगोई पूरी हो गई जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनके बारे में फ़रमाई थी कि ''मेरा यह बेटा सरदार है, खुदा उसके जरिये से मुसलमानों के दो बड़े गुरोहों में सुल्ह करायेगा''।

ख़िलाफ़ते राशिदा ख़त्मः–

इमाम हसन रज़ि0 चन्द महीने खलीफा रहे, उनकी दस्त बरदारी पर ''खिलाफते राशिदा'' खत्म हो गई, और उस खिलाफत का आगाज़ हुआ जिसे खिलाफते मुलूकीयत कहते हैं, यानी वह खिलाफत जिस की वजअ़ कतअ् (वजा कता–बनावट) और रंग ढंग बादशाही का था, बनू उमय्या, बनू अब्बास और उस्मानी तुर्कों की खिलाफत हर लिहाज़ से बादशाही थी, बनू उमय्या के ज़माने में तो अरबीयत की रूह बाक़ी थी, बनू अब्बास के ज़माने में यह भी ख़त्म हो गई और ठेठ अजमीयत आगई।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम की सीरतः–

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु दस्त बरदारी के बाद नौ बरस ज़िन्दा रहे, यह सारी मुद्दत मदीने में गुज़ारी, मामूल यह था कि फज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक मुसल्ले पर रहते, फिर टेक लगा कर बैठ जाते और आने जाने वालों से मिलते, चाश्त की नमाज़ पढ़ कर उम्महातुल मोमिनीन के सलाम के लिए जाते, घर होते हुए फिर मस्जिद में पहुंच जाते, ज़रूरत मन्दों की इम्दाद में कोई कमी न फ़रमाते।

फय्याज़ी का यह आलम था कि एक मरतबा अपने पूरे माल के दो हिस्से किये, एक हिस्सा राहे खुदा में दे दिया।

एक मरतबा देखा कि एक शख़्स दस हज़ार दिरहम माँग रहा था, घर पहुँचते ही उसे दस हजार दिरहम भिजवा दिये।

शक्ल व सूरत में रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत मिलते जुलते थे।

रज़ियल्लाहु अन्हुम व रजू अन्हु।

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلمــاء
ص.ب.٩٣/، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date 09/09/2018 ——— التاريخ ٢٨ر ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखिये

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

हिन्दोस्तान के क़दीम बाशिन्दे गोश्त ख़ोर थे
ہندوستان کے قدیم باشندے گوشت خور تھے۔
कोल, भील, द्राविड़, कोरी, पासी, रैदास गोश्त ख़ोर हैं
کول، بھیل، دراوڑ، کوری، پاسی ریداس گوشت خور ہیں۔
छत्री, कायस्थ और कल्वार सब गोश्त खाते हैं
چھتری، کایستھ اورکلوار سب گوشت کھاتے ہیں۔
ब्रह्मन ज़ात के लोग गोश्त नहीं खाते हैं
برہمن ذات کے لوگ گوشت نہیں کھاتے ہیں۔
बौद्ध मज़हब के लोग गोश्त नहीं खाते हैं
بودھ مذہب کے لوگ گوشت نہیں کھاتے ہیں۔
जैन मजहब के लोग गोश्त नहीं खाते हैं
جین مذہب کے لوگ گوشت نہیں کھاتے ہیں۔
आमतौर से यादव लोग गोश्त नहीं खाते हैं
عام طور سے یادو لوگ گوشت نہیں کھاتے ہیں۔
मुसलमान सिर्फ़ हलाल जानवरों और परिन्दों का गोश्त खाते हैं
مسلمان صرف حلال جانوروں اور پرندوں کا گوشت کھاتے ہیں۔
मुसलमान सिर्फ़ ज़बीहे का गोश्त खाते हैं
مسلمان صرف ذبیحہ کا گوشت کھاتے ہیں۔
ईसाई, यहूदी, मजूसी, सब गोश्त ख़ाते हैं
عیسائی، یہودی، مجوسی سب گوشت کھاتے ہیں۔
दुन्या की अक्सरीयत गोश्त ख़ोर है
دنیا کی اکثریت گوشت خور ہے۔